पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-७, जनवरी, सन्-२०१६, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १६४, सृष्टि सं० १,६६,०८,५३,११६; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

गणतंत्र दिवस पर विशेष

राष्ट्र-प्रेम और जातीय-गौरव के 'धधकते पृष्ठ' हैं ये !

इनकी आँच में रह रह कर सुलग रहे हैं पाठकों के अन्तर्मन

डॉ. वेद प्रकाश आर्य की काव्यकृति पर 'ब्रज कुमुदेश' के सम्पादक अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' की टिप्पणी

आदरणीय डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी की कृति 'धधकते पृष्ठ' अपने नाम को सार्थक करती हुई एक अनूठी बेजोड़ कृति है। इस कृति में कुल बारह कवितायें संग्रहीत हैं।

परन्तु ये मात्र कविताएँ ही नहीं बल्कि शौर्य की गाथाएँ हैं, जिसमें भारतीय अतीत से गौरवपूर्ण अंशों को लेकर आज के समाज को झकझोर कर जगाने का सफल प्रयास किया गया है। कवि डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी ने अपनी उद्भावनाओं में यह भी कहने का प्रयास किया है कि वीरांगनाओं, रानियों की रक्षा में प्रथम वीर राजाओं सेनापतियों एवं सैनिकों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया था। इसमें यह भी बताने का प्रयास किया गया है दोनों का एक समान देश, धर्म एवं अस्मिता को बचाने में योगदान रहा है। वीर रौद्र आदि काव्य रसों से परिपूर्ण ऐसी कृति कविवर डॉ.वेद प्रकाश आर्य जी को पाठ्यक्रमों में निहित पूर्व में हुए नामी श्रेष्ठ ओज कवियों की श्रेणी में खड़ी करती है। 'धधकते पृष्ठ' जैसी अनुपम कृति का उससे कम मूल्य नहीं आंका जा सकता।

'धधकते पृष्ठ' की प्रथम रचना 'धरा का नन्दन' शीर्षक से है। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है यह धरती का स्वर्ग कहा जाता है। आज पुनः दुश्मन की कुटिल निगाहें उस पर पड़ रही हैं। इतना ही नहीं सम्पूर्ण देश पर आतंक के बादल छाये हुए हैं। कवि ने पौराणिक प्रसंगों के आधार पर अपने भावों को और रोचक रूप दिया है। धरा का नन्दन शीर्षक रचना का एक छन्द देखिए जिससे शत्रुओं को चेतावनी दी गई है-

हम प्रथम प्रेम के मृदु बन्धन तोड़ते नहीं,
तो समरांगण से अपना मुख मोड़ते नहीं,
हम छेड़ छाड़ का नाता हैं जोड़ते नहीं,
अगर किसी ने छेड़ा तो छोड़ते नहीं।

द्वितीय रचना 'आशाराम की आशा' शीर्षक से है। सन् १६६५ की पाकिस्तान की लड़ाई में वीरवर मेजर आशाराम की शौर्य गाथा का रोचक वर्णन है। आशाराम ने अमेरिका में निर्मित अनेक पैटन टैंकों को नष्ट कर दिया, दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिए, घायल अवस्था में भी कई पैटन टैंकों को नष्ट किया और अरियों को मौत के घाट उतार दिया। उसी वीर की इच्छा देखिए-

एक ही चिन्ता कि सूरज
मेघ में लुकने न पाये।
एक ही चिन्ता कि पौरुष
राष्ट्र का चुकने न पाये।

एक ही चिन्ता कि गति का
रथ कभी रुकने न पाये।
एक ही चिन्ता कि झण्डा
देश का झुकने न पाये।

तृतीय रचना 'नई पूजा नई आरती' शीर्षक से दी गई है। इसमें विशाल भारतवर्ष के बटवारे एवं उसकी वेदना का मार्मिक वर्णन है। कुछ कांग्रेसी नेताओं के निजी स्वार्थ एवं पद लोलुपता के कारण देश का बटवारा हुआ। परन्तु उसका विरोध किसी ने नहीं किया। वही पीड़ा इसमें पूर्ण रूप से साकार हुई है। साथ ही इसमें भारतीयों में ऊर्जा का संचार किया गया है। रचना के प्रारम्भ के दो छन्द प्रस्तुत हैं-

उस अर्धरात्रि के सन्नाटे में
चीख उठा पंजाब बंग,
जब किया गया चालीस कोटि,
प्राणों की माँ का अंग भंग।

सोये बापा के वीर बबर
तलवार भवानी सोती थी,
अफसोस कि उस दिन झाँसी की
मरदानी रानी सोती थी।

चतुर्थ रचना 'चाऊएनलाई से' शीर्षक से है। इसमें सन् १६६२ ई. के चीनी आक्रमण का वर्णन है। पहले चाऊएन लाई भारत आये इनका परम्परागत विधिवत् स्वागत सत्कार किया गया। यहाँ से जाने के बाद चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया। चीन के द्वारा किया गया विश्वासघात बड़ा ही घातक सिद्ध हुआ। किसी को ऐसी आशा नहीं थी। इस रचना में कविवर डॉ.आर्य जी ने हिमालय का रोचक वर्णन करते हुए पौराणिक प्रसंगों का आधार लेते हुए चीन को चेतावनी दी है-

लक्ष्मण की वह रेखा अब तक,
बनी हिमालय खिंची हुई है,
जिसने इसको पार कर दिया
मौत उसी की लिखी हुई है।

अर्द्धरात्रि को समझ प्रभाती,
तमचुर कहीं पुकार न करना,
सब कुछ करना किन्तु भूलकर,
लक्ष्मण-रेखा पार न करना।

'घर के मित्रों से सावधान' शीर्षक की पंचम रचना में कवि ने राष्ट्रीय एकता का चित्रण करते हुए घर में ही छिपे देशद्रोहियों एवं गद्दारों से सावधान रहने की बात की है। इतिहास साक्षी है कि जब जब बाहरी आक्रमण हुए हमें घर के छिपे गद्दारों के कारण ही पराजित होना पड़ा। यही स्थिति आज भी है जिसे प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। अतः इनसे सावधान रहना आवश्यक है। देखिए-

हम अपने हाथों से बने हुए
अपने फंदों से हार गये,
हम गोरी से तो जीत गये,
पर जयचन्दों से हार गये।

'संधान बदलना ही होगा' शीर्षक षष्ठ रचना में उस महाविनाश को रोकने की बात कही है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि ही समाप्त हो जायेगी। आज विश्व परमाणु बम के ढेर पर बैठा है। यदि कभी यह चल गये तो सम्पूर्ण विश्व राख में बदल जायेगा। हमने अपने आत्मबल तथा तीर तलवारों द्वारा ही सभी आक्रमणकारियों को धूल चटा दी। परमाणु युद्ध न हो इसलि इन्हें नष्ट करना ही होगा। प्रस्तुत हैं दो छन्द-

भोगवाद के ओ जलधर!
भौतिक झंझाओं के ओ झोंकों!!
ओ प्रलयंकर! प्रलयवेग के
इस रथ को अब रोको रोको।

मधुवन के इस अलिगुंजन को
हम वीरान नहीं होने देंगे,
हरे भरे इस नन्दनवन को
हम शमशान नहीं होने देंगे।

सप्तम रचना 'समझौते बाजी बन्द कारो' शीर्षक से है। चीन और पकिस्तान हमारी भूमि पर कब्जा किये हुए है किन्तु हम समझौता किया करते हैं जिससे आज तक कोई हल नहीं निकला। चीन हो या पाकिस्तान सभी आये दिन हम पर वार किया करते हैं। युद्ध ही इसका एक विकल्प है। देखिए-

बढ़ने दो फिर तिब्बत मुक्त कराने दो,
पेकिंग की छाती पर झण्डा फहराने दो,
हो चुका बहुत समझौते बाजी बन्द करो,
हे राष्ट्ररथी! अब सौदेबाजी बन्द करो।

अष्टम रचना 'शक्ति स्रोत है नारी' में नारी में छिपी उस शक्ति का वर्णन किया है जिसका स्मरण आज भी हम करते नहीं थकते नारी शृंगार भी है और अंगार भी, नारी ही आदि शक्ति स्वरूपा है। यह इस रचना से सिद्ध होता है। इसमें पौराणिक एवं ऐतिहासिक नारी के शौर्य अदम्य साहस, वीरता, स्वाभिमान एवं देश की अस्मिता निहित है। इस रचना में सीता, द्रौपदी, पद्मिनी रानी लक्ष्मीबाई एवं चाँद बीवी आदि के शौर्य साहस का मनमुग्धकारी चित्रण है। साथ ही इसमें यह संकेत किया गया है कि नारी रक्षा में पुरुषों का भी बलिदान कम नहीं है-

एक बार चित्तौड़ भूमि पर
तूने थे मोती बिखराये,
रूपवती पद्मिनी सती बन
मेघ आँसुओं के बरसाये।

हमने गोरा बादल बनकर
बलिदानों का किया उजाला,
जौहर के होने से पहले
प्राणों का जौहर कर डाला।

'चन्दवरदायी का उद्बोधन' शीर्षक से नवम् रचना में कहा गया है कि जब जब हमने तलवार छोड़ दी हमारा पतन ही हुआ, वह चाहे सम्राट अशोक हो, या अन्य। गजनी ने भारत को तब लूटा जब हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। गोरी के आक्रमण के समय भी महावीर सम्राट रनिवास में रँगरेलियाँ मना रहे थे। ऐसे में महाकवि एवं योद्धा चन्दवरदाई ने अपने शब्दों से उसे जगाया एवं गोरी का संहार हुआ-

कवि की वाणी सुन उसका डोला सिंहासन
डूबी नूपुर की ध्वनि रण की शहनाई में,
वे चिन्ह प्रणय के तड़क तड़क कर टूट गये
बंध गया जूझ का कंकण वीर कलाई में।

'दो अनमोल मोती' शीर्षक दशम रचना में गुरु गोविन्द सिंह जी के दो छोटे बेटों को मुगलों ने सरहिन्द के किले में चुनवा दिया था। परन्तु वे अपनी आन बान से नहीं हटे। इसी मार्मिक घटना का वर्णन इसमें किया गया है। जब छोटे बेटे का

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

शतायु जीवन

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत्ँसमाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।

(यजुर्वेद : 40/2)

चाहें यदि शतायु जीवन को,

करें कर्म निष्काम
निरन्तर,
नहीं चलें अन्यथा
पंथ पर !

लिप्त न होते कर्म कृती से,
जो रखते विरक्त तन-मन को !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

करीना की कसक

बालीवुड की प्रसिद्ध अभिनेत्री करीना कपूर ने दक्षिण अफ्रीका में अपने पुत्र तैमूर का दूसरा जन्म दिन मनाते हुए अपने ज्यादा न पढ़ पाने की कसक जाहिर की है। दैनिक जागरण 'मनोरंजन स्तम्भ' के लेखक के अनुसार करीना कहती हैं- मैंने सत्रह साल की उम्र में ही ग्लैमर वर्ल्ड में कदम रख दिया था और अब तक उसी में जुटी हुई हूँ। मुझे लगता है मैंने अपना कैरियर बहुत जल्दी शुरू कर दिया था, पर तैमूर को ऐसा नहीं करना चाहिए। मुझे अपना कैरियर थोड़ी देर बाद शुरू करना चाहिए था और अपनी पढ़ाई पूरी कर डिग्री ले लेनी चाहिए थी। शिक्षा पूर्ण करने के बाद ही फिल्मी दुनिया में कदम बढ़ाने चाहिए थे। करीना कहती हैं कि वे हमेशा अपने बेटे तैमूर को पढ़ाई की अहमियत बतायेंगी और इस बात के लिए प्रेरित करेंगी कि वह कैरियर को लेकर कोई जल्दबाजी न करे।

भारतीय सिनेमा के शलाका पुरुष पृथ्वीराज कपूर की प्रपौत्री, सबसे बड़े शोमैन राज कपूर की पौत्री और राज कपूर के ज्येष्ठ पुत्र रणधीर कपूर की सुपुत्री करीना कपूर खान की यह कसक वाजिब है। अधूरी शिक्षा ने उसके जीवन को इस कदर प्रभावित किया कि उसकी जिन्दगी की गाड़ी को ही ऐसे मोड़ पर पहुँचा दिया, जिसका असर उसके जीवन पर ही नहीं, पीढ़ी दर पीढ़ी पड़ने वाला है। एक प्रसिद्ध कहावत है-'A Little knowledge is dengerous' अर्थात् अल्प विद्या भयंकरी।

यदि करीना ने अपनी शिक्षा पूर्ण कर ली होती तो उसमें अवश्य ही वह विवेक जागृत हुआ होता कि वह अपने पूर्वजों के उस महान् वैदिक आर्य हिन्दू धर्म का परित्याग कर कभी भी इस्लाम का आश्रय नहीं कबूल करती। कदाचित् उसे कोई यह अहसास कराने वाला नहीं था कि वह फिल्मी दुनिया के उस महान् शो मैन की पौत्री है जिसने दुनिया में अपनी कामयाबी का झण्डा गाड़ने वाली आर.के.फिल्म कम्पनी का निर्माण किया था, जिसके बैनर तले आग, आह, आवारा, श्री चार सौ बीस, जिस देश में गंगा बहती है, संगम, मेरा नाम जोकर, सत्यम शिवम् सुन्दरम्, बॉबी, हिना, राम तेरी गंगा मैली हो गई जैसी यादगार अमर फिल्मों का निर्माण हुआ था और सबसे विशिष्ट बात यह थी कि आर.के.फिल्मस कं. की प्रत्येक फिल्म का प्रारम्भ निम्नांकित वेदमंत्र के सस्वर पाठ से हुआ है-

ओम् नमः शम्भवाय च मयोभुवाय च।
नमः शंकराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय च।। (यजुर्वेद १६/४१)

यह मंत्रोच्चार करीना के पितामह पृथ्वीराज कपूर द्वारा उन्हीं की आवाज में होता था। ऐसे गौरवशाली सांस्कृतिक धार्मिक हिन्दू परिवार की बेटी का निकाह, कलमा, तलाक के भँवरजाल में पड़ना कहाँ तक वाजिब है? यह विचारणीय है।

जिस अधूरी शिक्षा ने करीना की सासु शर्मिला टैगोर की आँखों पर पट्टी बाँध दी थी, अपनी पारिवारिक वैदिक परम्पराओं की तिलांजलि दे दी थी, उसी अधूरी शिक्षा ने करीना कपूर को करीना कपूर खान बना दिया। हालांकि प्रारंभ में हिन्दू संस्कारों ने जोर मारा था और करीना ने कहा था कि वह करीना कपूर ही कहलाना पसन्द करेगी किन्तु सैफ अली खान के आगे उसकी क्या चलती? अन्ततः उसके नाम के आगे खान भी जोड़ा जाने लगा।

भारतीय फिल्म जगत में सैफ अली खान जैसा चतुर बुद्धिमान योजनाबद्ध काम करने वाला दूसरा कोई ढूंढे नहीं मिलेगा। काले हिरण के शिकार का दोषी होने के बावजूद सैफ अली का 'पद्मश्री' जैसी महत्वपूर्ण राजकीय उपाधि हासिल करने में सफलता प्राप्त करना उसकी बौद्धिक क्षमता और चातुर्य का कमाल ही कहा जायगा अन्यथा किसी अभियोग प्राप्त व्यक्ति को 'पद्मश्री' जैसा अवार्ड कैस मिल सकता था? इतना ही नहीं, नामकरण की महत्ता को जितना सैफ अली ने समझा है, उतना किसी अन्य ने नहीं। कदाचित् इस *आशंका से उसके पुत्र का नाम कहीं उसके ननिहाल पक्ष पर न चला जाय,* उसने पहले ही 'तैमूर' नाम की घोषणा कर दी। जब लोगों ने यह बताना चाहा कि यह नाम तो एक विदेशी क्रूर आक्रमणकारी तैमूल लंग का है, तो झट उसने 'तैमूर' शब्द की व्युत्पत्ति कर उसके अच्छे अर्थ को भी समझा दिया। अरे, सैफ अली! औरंगजेब, चंगेज खान, अलाउद्दीन खिलजी, नादिर शाह के नामों का शाब्दिक अर्थ क्या भव्य और सुन्दर नहीं है किन्तु अच्छे अर्थ वाले औरंगजेब या नादिर शाह के नाम कोई क्यों नहीं रखना चाहता? क्या तैमूर लंग का नाम उपर्युक्त नामों से कुछ कम भयावह है? किन्तु आज तैमूर शब्द को ग्राह्य बना दिया है। यह कमाल सैफ ही कर सकते थे। वह चाहता तो बेटे का नाम तैमूर की जगह तमहर रख सकता था या वैसे नाम रख सकता था जैसे शाहरूख खान की तरह आर्यन या अवराम इत्यादि द्वयर्थक नाम भी रख सकता था किन्तु तैमूर रखकर उसने ननिहाल पक्ष की भावनाओं के प्रवेश के द्वार बंद कर दिये। कदाचित सैफ को इस बात की आशंका रही होगी कि कहीं करीना और शर्मिला बहू-सासु के अन्दर पूर्वजों के संस्कार जोर न मारने लगें। 'पूर्व संस्कारो विप्लावयति' की उक्ति के अनुसार उसके द्वारा निर्मित संजाल छिन्न भिन्न हो जाय।

करीना की कसक अन्य ग्लैमर के स्वप्नलोग में खो जाने वाली अभिनेत्रियों के लिए नसीहत है। यदि विश्व सुन्दरी ऐश्वर्या राय जैसी विवेक क्षमता करीना में रही होती तो वह ऐसी दूरगामी पीड़ाओं की कसक से मुक्त रही होती और रंगमंच पर हेमामालिनी इत्यादि की भाँति एक गौरवास्पद स्थान प्राप्त कर सकती थी।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९१

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

मुक्ति और बंध

जैसे कटु न हो तो मधुर क्या, जो मधुर न हो तो कटु क्या कहावे? क्योंकि एक स्वाद के एक रस के विरुद्ध होने से दोनों की परीक्षा होती है। जैसे कोई मनुष्य मीठा मधुर ही खाता पीता जाय उसको वैसा सुख नहीं होता जैसा सब प्रकार के रसों के भोगने वाले को होता है।

और जो ईश्वर अन्त वाले कर्मों का अनन्त फल देवे तो उसका न्याय नष्ट हो जाय। जो जितना भार उठा सके उतना उस पर धरना बुद्धिमानी का काम है। जैसे एक मन भर उठाने वाले के शिर पर दश मन धरने से भार धरने वाले की निन्दा होती है वैसे अल्पज्ञ अल्प सामर्थ्य वाले जीव पर अनन्त सुख का भार धरना ईश्वर के लिए ठीक नहीं।

और जो परमेश्वर नये जीव उत्पन्न करता है तो जिस कारण से उत्पन्न होते हैं वह चुक जायगा। क्योंकि चाहें कितना ही बड़ा धनकोश हो परन्तु जिसमें व्यय है और आय नहीं उसका कभी न कभी दिवाला निकल ही जाता है। इसलिये यही व्यवस्था ठीक है कि मुक्ति में जाना वहां से पुनः आना ही अच्छा है। क्या थोड़े से कारागार से जन्म कारागार दण्ड, काले पानी अथवा फांसी को कोई अच्छा मानता है? जब वहां से आना ही न हो तो जन्म कारागार से इतना ही अन्तर है कि वहां मजूरी नहीं करनी पड़ती और ब्रह्म में लय

होना समुद्र में डूब मरना है।

(प्रश्न) जैसे परमेश्वर नित्यमुक्त, पूर्ण सुखी है वैसे ही जीव भी नित्यमुक्त और सुखी रहेगा तो कोई भी दोष न आवेगा।

(उत्तर) परमेश्वर अनन्त स्वरूप, सामर्थ्य, गुण, कर्म, स्वभाववाला है इसलिये वह कभी अविद्या और दुःख बन्धन में नहीं गिर सकता। जीव मुक्त होकर भी शुद्धस्वरूप, अल्पज्ञ और परिमित गुण कर्म स्वभाव वाला रहता है, परमेश्वर के सदृश कभी नहीं होता।

(प्रश्न) जब ऐसी, तो मुक्ति भी जन्म मरण के सदृश है इसलिये श्रम करना व्यर्थ है।

(उत्तर) मुक्ति जन्म मरण के सदृश नहीं, क्योंकि जब तक 360000बार उत्पत्ति और प्रलय का जितना समय होता है उतने समय पर्यन्त जीवों को मुक्ति के आनन्द में रहना, दुःख का न होना, क्या छोटी बात है? जब आज खाते पीते हो तो कल भूख लगने वाली है पुनः इसका उपाय क्यों करते हो? जब क्षुधा, तृषा, क्षुद्र, धन, राज्य, प्रतिष्ठा, स्त्री, सन्तान आदि के लिये उपाय करना आवश्यक है तो मुक्ति के लिए क्यों न करना? जैसे मरना अवश्य है तो भी जीवन का उपाय किया जाता है वैसे ही मुक्ति से लौट कर जन्म में आना है तथापि उपाय करना अत्यावश्यक है।

(प्रश्न) मुक्ति के क्या-क्या साधन हैं?

(उत्तर) कुछ साधन तो प्रथम लिख आये हैं परन्तु विशेष उपाय ये हैं। जो मुक्ति चाहे वह जीवनमुक्त अर्थात् जिन मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों का फल दुःख है, उनको छोड़ सुखरूप फल को देने वाले सत्यभाषणादि धर्माचरण अवश्य करे। जो कोई दुःख को छुड़ाना और सुख को प्राप्त होना चाहे वह अधर्म को छोड़ धर्म अवश्य करे। *(क्रमशः)*

वेद प्रवचन

मनुष्य कब बनता है?

❑पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

वनेम पूर्वीर्यो मनीषा अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः।
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वाना मानुषस्य जनस्य जन्म।।

(ऋग्वेद : 1/70/1)

शब्दार्थ-

जिस प्रकार **(दैव्यानि)** देवत्व प्राप्त करने वाले **(व्रतानि)** सम्पूर्ण सत्यव्यवहार आदि श्रेष्ठ व्रतों को **(आचिकित्वान्)** भली भाँति जानने वाला **(अग्निः)** सर्वज्ञ **(सुशोकः)** उत्तम प्रकाशमय **(अर्यः)** जगदीश्वर **(विश्वानि)** सबको **(अश्याः)** प्राप्त है, उसी प्रकार हम भी **(मनीषा)** बुद्धि से, मननशक्ति से **(पूर्वीः)** पहले से विद्यमान, मुख्यता प्राप्त करनेवाली बुद्धियों का **(आ)** उत्तमता से **(वनेम)** आदरपूर्वक सेवन करें। यही **(मनुष्यस्य)** मनुष्यजाति के **(जनस्य)** प्राणी का **(जन्म)** उत्पन्न होना है।

व्याख्या-

मंत्र में दो बातें मुख्यरूप से कही गयी हैं-पहली यह कि संसार के व्यवस्थापक प्रभु के दिव्य गुणों को मनुष्य समझे; दूसरी यह कि उन गुणों को समझकर अपने जीवन में धारण करे। तभी इस शरीर में मनुष्यता का जन्म होता है, केवल मानव-आकृति धारण करने से नहीं।

इस विचित्र संसार के उत्पादक, धारक और संहारक प्रभु के असीम बुद्धि कौशल, नियम-निष्ठा तथा परम ज्ञानैश्वर्य को मनुष्य ज्यों-ज्यों समझता जाता है, त्यों-त्यों उसके ज्ञान की भूख उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। यदि वह उन दिव्य गुणों के आंशिक भाग को भी अपने आचरण में ले आता है तो उसमें दिव्यता आ जाती है और उसका पशुता से पिण्ड छूट जाता है। इस बात को 'मानव धर्म शास्त्र' में इस प्रकार से कहा गया है-

यथा-यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथा-तथा विजानाति विज्ञानश्चास्य रोचते।।
(मनु.4/20)

'मनुष्य ज्यों-ज्यों विद्या और बुद्धि के विषयों को समझता जाता है, त्यों-त्यों उसका ज्ञान-भण्डार समृद्ध होता जाता है और फिर उसे सूक्ष्म ज्ञान की बातें समझ में आने लगती हैं तथा उनमें रुचि भी बढ़ती जाती है।'

ज्ञान का लाभ तभी है जब वह अपने आचरण का अंग बन जावे, क्योंकि जानना, जानने के लिए नहीं, अपितु कुछ करने के लिए है। जो ज्ञान कर्म के साथ नहीं जुड़ता, वह निरर्थक है; वाहक के ऊपर लदे बोझ के समान है, क्योंकि उससे जो लाभ उसे होना चाहिए, वह उससे वंचित है। इसी बात को नीतिकार ने इस प्रकार कहा है-

'यथा खरश्चन्दन भारवाही
भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य।'

'जैसे गधे पर चन्दन लदा है तो वह उसके बोझ को तो अनुभव करता है, किन्तु चन्दन के क्या लाभ हैं और उससे कैसे सुख प्राप्त किया जाता है, वह इस बात को नहीं जानता।' सामान्य व्यक्ति भी यह जानते हैं कि मलेरिया ज्वर की निवारक औषधि 'कुनीन' है; चाहे उस मिश्रण के रूप में प्रयोग करें, चाहे गोली के रूप में। अब किसी व्यक्ति को मलेरिया ज्वर चढ़े और वह ऊंची आवाज में अपनी जानकारी बघारते हुए भाषण दे कि इस रोगका शत्रु 'कुनीन' है, उसके सामने यह ज्वर कभी ठहर नहीं सकता; किन्तु वह व्यक्ति यदि अपने ज्ञान के अनुसार कुनीन नहीं खाता तो उस ज्ञान का उसे किंचित मात्र भी लाभ नहीं होगा। ज्वर से छुटकारा तभी मिलेगा, जब वह उस औषध का प्रयोग करेगा। इसीलिए मंत्र में कहा कि प्रभु की सृष्टि में उसके ज्ञान-विज्ञान को देखकर अपनी उन्नति के लिए अपनी योग्यता के अनुसार उस पर चलने का व्रत लेना चाहिए। तभी हम मनुष्य बन सकते हैं।

दूसरे नम्बर पर किसी को अपने बल पर अभिमान हो सकता है। इस पर भी विचारिये। जो बल एक दिन के ज्वर के झटके में उड़ जाय, जो एक दिन की पेचिश में ही न टिके, एक नस और नाड़ी के स्थानच्युत होने पर ही न रहे, क्या वह भी अभिमान के योग्य हो सकता है? तीसरे नम्बर पर लोग धन पर घमण्ड करते हैं। इस पर भी सोचिये! लक्ष्मी का क्या भरोसा है? यह कब तक टिकेगी? शानदार भवन और ठाट-बाट सब रह जाते हैं, किन्तु अन्दर से सम्पत्ति किनारा कर जाती है और अपनी रिक्तता छिपानी भी कठिन हो जाती है।

इस प्रकार इन पशुताओं से पिण्ड छुड़ाये बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं बन सकता। बड़ा वैज्ञानिक बनना, बड़ा डाक्टर बनना, बड़ा विद्वान् बनना और बात है, किन्तु बड़ा मनुष्य, अर्थात् महान् आत्मा बनना दूसरी बात है। अमेरिका के कैपकैनेडी कस्बे के वैज्ञानिक चन्द्रमा और दूसरे ग्रहों तथा उपग्रहों की करोड़ों मील की उड़ान भरनेवाले यान बनाते हैं, किन्तु जितनी शराब वहां पी जाती है, अन्यत्र नहीं, और जितनी दुश्चरित्रता वहां है, वह भी अन्यत्र शायद ही हो। ठीक ही लिखा है किसी शायर ने-

इन्साँ ने मेहरो-माह की राहें तो देख लीं,
खुद उसकी अंजुमन में चिराग़ाँ न हो सका।

इसीलिए मंत्र में कहा गया है कि आत्मोत्थान के दैव्य व्रतों को धारण किये बिना इस शरीर में मनुष्यता उत्पन्न नहीं होती।

आज संसार को सुख और शान्ति का धाम बनाने का प्रयत्न तो हो रहा है, किन्तु मानवता की प्राप्ति के लिए जिस संयम और वशित्व की आवश्यकता है, उस ओर लोगों का ध्यान ही नहीं है। इसलिए संसार को सुख शान्ति का धाम बनाने के लिए सर्वप्रथम मनुष्य को मनुष्य बनना आवश्यक है। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११५

कुरीतिव्यूहानां भ्रमरसलिले मग्नहृदयाः
मतिः कुण्ठाग्रस्ता करचरणशक्तिर्व्यपगता।
हृतध्वाना वाणी बलरहितगात्रं च कपिशं
तदा शंखध्माता त्ववतरसि पुण्यादिव यते !

कुरीतियों के भंवर जाल में
हमारे मन डूबे हुए थे !
बुद्धि कुण्ठाग्रस्त थी और
हाथ-पांवों की शक्ति नष्ट हो चुकी थी।
हमारी वाणी की गूंज
समाप्त हो गयी थी और
शक्तिहीन शरीर पीला पड़ गया था।
हे संन्यासी !
ऐसे अवसर पर तुम
हमारे पुण्य से
शंख फूंकते हुए
प्रकट हुए !!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग
जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

आठों याम, आठ सिद्धियाँ और नव निधियाँ क्या हैं? यदि याम का अर्थ समय है तो उन यामों के क्या नाम हैं? नवनिधियों का जिक्र आपकी पुस्तक 'धधकते पृष्ठ' में भी है-

नव निधियाँ मिल सकती हैं,
मिल सकती है सुख-सुषमा।
पर नहीं मिलेगी केवल
तू ही मेरी प्यारी माँ।

(श्रीमती कुमुद गुप्त, बी-1/114, अलीगंज, लखनऊ ने मेरे माध्यम से उपर्युक्त जिज्ञासा प्रस्तुत की हैं, क्योंकि वे सम्प्रति अस्वस्थता के कारण लिख नहीं पा रही हैं।)

-पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

समाधान :

कविवर रसखान की कविता बहुत ही प्रसिद्ध है- 'आठहु सिद्धि नवौं निधि के सुख, नंद की धेनु चराई बिसारौं।'

'याम' का अर्थ समय नहीं होता अपितु याम का अर्थ है- 'प्रहर'। रात्रि-दिन के 24 घंटों को 8 प्रहरों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक प्रहर तीन घंटे का होता है। इस तरह रात-दिन के 24 घंटों में आठ प्रहर माने गये हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं-

1.पूर्वाह्न	5.प्रदोष
2.मध्याह्न	6.निशीथ
3.अपराह्न	7.त्रियामा
4.सायंकाल	8.ऊषाकाल

प्रारम्भ के चार प्रहर दिन के हैं और बाद के चार प्रहर रात्रि के हैं। आठ प्रहर 'अष्ठयाम' के नाम से भी जाने जाते हैं। प्रसिद्ध है कि चौबीसो घंटे भगवत् कीर्तन की व्यवस्था श्रीमद्वल्लभाचार्य एवं विट्ठलनाथ जी द्वारा- श्रीनाथ द्वारा में जब की गई तो प्रत्येक याम में कीर्तन के लिए आठ गायक कवियों को उन्होंने नियुक्त किया था- इनमें सूरदास जी प्रमुख थे। अष्टयाम के इन कवियों को साहित्य में अष्टछाप के कवियों के नाम से जाना जाता है। प्रथम चार वल्लभाचार्य ने नियुक्त किये थे, बाद के चार कवियों को विट्ठल जी ने। इस प्रकार अष्टछाप को उन्होंने पूर्णता प्रदान की।

'अष्ट सिद्धियाँ' निम्नांकित हैं-

1.अणिमा-सूक्ष्म से सूक्ष्म हो जाना 2.महिमा-बड़े से बड़ा हो जाना 3. लघिमा-हल्के से हल्का हो जाना 4. गरिमा-भारी से भारी हो जाना 5.प्राप्ति-इन्द्रियों का अधिष्ठाता हो जाना 6. प्राकाम्य-सब मनोरथों को पूर्ण करने की शक्ति पाना 7.इशित्व-सब पर शासन करने की शक्ति पाना 8.वशित्व-सब को वश में करने की शक्ति पाना।

आठ सिद्धियों में प्रथम तीन का सम्बन्ध शरीर से है। सुरसा नाम की राक्षसी ने महिमा सिद्धि के बल पर ही अपना मुख 100 योजन फैलाया होगा और हनुमान् ने अणिमा के कारण इतना सूक्ष्म रूप बनाया होगा कि सुरसा के मुख में प्रवेश करके भी निकल आए। लौकिक व पारलौकिक पदार्थों की इच्छानुसार अनुभव करने वाली सिद्धि का नाम प्राकाम्य है। समस्त कार्यों को इच्छानुसार संचालित करने वाली सिद्धि का नाम ईशता है। वशित्व सिद्धि के बल पर ही श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध को बाणासुर की पुत्री उषा अपने महल में ले गई थी। हनुमान जी लघिमा के बल पर उड़ जाते थे और गरिमा के बल पर पवर्ताकार बन जाते थे।

कुछ ग्रन्थों ने हीरक, मौक्तिक, मणिक, पन्ना, नीलम, पुखराज, पर्वत, मूँगा व फिरोजा को नवरत्न कहा है। कहीं वैदूर्य को भी नवरत्नों में रखा गया है, किन्तु संख्या सबने नौ ही रखी है। इन नवरत्नों से सम्पन्न व्यक्ति इनका मोह त्याग देने के बाद नवनिधियों की कामना करने लगते हैं। भक्त अपने आराध्य से अष्टसिद्धि व नवनिधि ही माँगते हैं। माता जानकी ने हनुमान् जी पर प्रसन्न होकर यही वर दिया था-

अष्टसिद्धि नवनिधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता।।

पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कृन्द, नील और खर्व नाम वाली नौ निधि हैं। ये कुबेर के नौ खजाने हैं। भारतीय अंक गणना में खर्व, नील, पद्म, शंख का निश्चित रूप है।

उपर्युक्त विवेचन हेतु हम एतद्विषयक ग्रंथ 'अंक चक्र' (प्रकाशक- डायमण्ड बुक्स, नई दिल्ली) के प्रख्यात लेखक डॉ.चन्द्रपाल शर्मा, पिलखुआ (मो.नं.9411054501) के आभारी हैं। -सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष....)

राष्ट्र-प्रेम और.....

सर चुना जाने लगा तब बड़े भाई की आँखों में आँसू देख छोटा कहता है-

यह देख अनुज ने कहा- 'मृत्यु
से डर कर होते क्यों अधीर,
यह मरण पर्व का शुभ मुहूर्त,
क्यों छलक रहा है नेत्र-नीर।'

अग्रज बोला- 'यद्यपि जग में
तुझसे पहले मैं ही आया,
सौभाग्य धर्म पर मिटने का
लेकिन पहले तू ने पाया।'

एकादश रचना में कवि ने अपनी जन्म दायिनी माँ का चित्रण किया है। किस प्रकार माँ अपने अनेक प्रकार के कष्ट सहकर भी अपने पुत्र का पालन पोषण करती है एवं संस्कार देकर पुत्र को चरित्रवान बनाती है। वात्सल्य परिपूर्ण ममतामयी माँ का चित्रण कवि ने बड़े ही मनोयोग से किया है-

तेरी गोदी में जिसने
आँखों का मलना सीखा,
फूलों सा खिलना सीखा
घुटनों बल चलना सीखा।

तुझसे ही सरल रसीली
सरला श्यामा को जाना,
उस दही पिलाने वाले
चन्दा मामा को जाना।

'धधकते पृष्ठ' की अन्तिम द्वादश रचना परिचय शीर्षक से है। जिसमें कवि ने अपनी व्यापक दृष्टि द्वारा अपने परिचय में अपना समष्टिगत अत्यधिक विराट परिचय दिया है। देखिए-

शस्त्र न मुझको छेद सके
ज्वालायें मुझको जला न पाई,
हिम प्रपात की धारायें भी
बहकर मुझको गला न पाई।

आप नहीं तूफान आ गये
मैं ही आह्वान किया है,
मुझे मृत्यु से क्या भय मैंने
पग पग पर विषपान किया है।

'धधकते पृष्ठ' मूल रूप से साहस, शौर्य आत्मबल वीरता की साकार मूर्ति है। माँ पर आधारित स्मृति के चरणों को छोड़कर सभी रचनाओं में वीर, शृंगार, भक्ति एवं करुण रस की धारायें जनमानस को परितृप्त करती हैं। प्रवाहपूर्ण भाषा, भावानुकूल शब्द चयन एवं उदाहरणों का इसमें सटीक प्रयोग किया गया है जिस कारण यह कृति अत्यधिक रोचक बन गई है। ऐसी कृतियाँ बहुत कम देखने को मिलती हैं। यह एक कालजयी, अनुपम, अमर कृति है एवं हिन्दी काव्य साहित्य की अमूल्य निधि है।

(209/20, नालबंदी टोला, ड्योढ़ी आगा मीर, लखनऊ-226003)

स्मृति-विशेष

वैदिक कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ

पं.सत्यदेव सैनी (इं)

आर्य सामाजिक विचारधारा में अटूट विश्वास और श्रद्धा रखने वालों में स्मृतिशेष पं.सत्यदेव सैनी एक गरिमापूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। जीवन के प्रथमोत्थान में वे आवास विकास परिषद् में प्रतिष्ठावान् इंजीनियर होने के साथ ही आर्य समाज आन्दोलन से सक्रिय रूप में जुड़े और आर्यजनों की प्रेरक शक्ति बनकर उभरे। आर्य समाज लालबाग के मंत्री, जिला आर्य सभा के मंत्री, आर्य समाज इन्दिरा नगर के मंत्री इत्यादि विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए उनकी कार्यशैली कभी भुलाई नहीं जा सकेगी। बाद में वे एक धर्मोपदेशक और वेदोक्त कर्मकाण्डों के विशेषज्ञ के रूप में भी प्रकाशित हुए। स्वाध्याय-निष्ठा उनके कार्य कलापों का मुख्य आधार रहा। आर्य समाज इन्दिरा नगर के वार्षिक उत्सवों और अन्य विशेष समारोहों पर आयोजित यज्ञों के अनेक बार ब्रह्मा पद को दक्षता पूर्वक उन्होंने सुशोभित किया।

श्री सत्यदेव सैनी का मेरा सान्निध्य अपेक्षाकृत कम ही रहा, तथापि मेरी स्मृति में कम से कम तीन प्रसंग ऐसे हैं, जो मेरे लिए अविस्मरणीय हैं। सैनी जी आर्य समाज लालबाग में सक्रिय थे और नरही में रहा करते थे। उन्होंने एक दिन मुझे अपने आवास पर भोजन हेतु आमंत्रित किया, संयोगवश उन दिनों सुप्रसिद्ध संस्कतज्ञ पं.धर्मानन्द शास्त्री जी भी उनके यहाँ ठहरे हुए थे। हम लोगों के लिए उन्होंने बहुत ही उत्तम भोजन व्यवस्था कर रखी थी। भोजन से पूर्व उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि हम दोनों कुछ प्रवचन भी करें। यद्यपि वहाँ सैनी जी के अलावा कोई श्रोता नहीं था फिर भी मैंने 'शन्नो मित्रः शं वरुणः' मंत्र की संक्षेप में व्याख्या प्रस्तुत की और पं.धर्मानन्द शास्त्री जी ने सारगर्भित प्रवचन दिया। उस दिन सैनी जी ने जो आतिथ्य सत्कार किया, भुलाये नहीं भूलता है और उनके स्नेह-श्रद्धा संवलित आतिथ्य-सत्कार को याद कर सिहर उठता हूँ।

दूसरा प्रसंग सन् २००२ का है। आर्य समाज टाण्डा अम्बेडकरनगर के वार्षिकोत्सव पर श्री आनन्द कुमार आर्य के विशेष आग्रह पर मैं सपरिवार गया। दैव दुर्विपाक से टाण्डा में ही पैर फिसल जाने से मेरी श्रीमती जी सरला आर्य का पैर फ्रैक्चर हो गया था। वहाँ से लखनऊ आकर शेखर हास्पिटल में उनका ऑपरेशन हुआ था, मैं इस दुर्घटना से मर्माहत और अत्यधिक दुःखी था। तभी मुझे शेखर अस्पताल में ही जानकारी मिली कि श्री सैनी जी मेरठ प्रवास के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गये हैं और काफी कष्ट में हैं। शेखर अस्पताल से निकल कर दैवी प्रेरणा से सैनी जी के घर की तरफ मेरे पैर चल पड़े। सैनी जी ने अपने साथ घटित दुर्घटना का पूरा ब्यौरा सुनाया, जिसे सुनकर मैं स्तंभित रह गया। ऐसी पीड़ादायक स्थिति में भी उनके सामने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' थी, जिसका वे स्वाध्याय कर रहे थे। पुस्तक में कई जगह रेखांकन और हस्तलिखित टिप्पणियां भी थीं, उन्होंने मुझे महर्षि कृत वह वाक्य भी दिखाया जिसमें लिखा था कि 'दुश्चरित्र को कभी भी योगसिद्धि नहीं हो सकती।' दुःखद कष्टप्रद परिस्थिति में इतनी स्वाध्यायनिष्ठा मैंने कहीं नहीं देखी।

तीसरा प्रसंग लगभग एक दशक पूर्व का है। आर्य समाज इन्दिरा नगर के तत्कालीन मंत्री श्री रमेशचन्द्र त्रिपाठी (वर्तमान में अमृतमुनि) के श्रद्धेय पिताजी श्री पं.रामशंकर त्रिपाठी जी दुर्घटनाग्रस्त होकर अत्यधिक अस्वस्थ हो गये थे। मुझे पता चला कि पंडित जी आजकल लखनऊ में ही अपने पुत्र श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी के साथ हैं। मैं उनसे मिलने गया। मैंने अपनी भी दास्तान उन्हें सुनाई क्योंकि मेरी श्रीमती जी भी उन दिनों पूर्व घटना के कारण बहुत कष्ट में थीं। उनका चलना फिरना रुका हुआ था। त्रिपाठी जी ने एक सुयोग्य चिकित्सक का परिचय दिया और बताया कि उनकी चिकित्सा से मेरे पिताजी अब काफी ठीक हैं और चलने फिरने लगे हैं। चिकित्सक का नाम है डॉ.कविता सहदेव-चित्रगुप्त नगर, आलमबाग लखनऊ। त्रिपाठी जी से यह पता लेकर मैं डॉ. कविता जी से मिला। सचमुच डॉ.कविता जी फिजियोथेरपी और होम्यो चिकित्सा पर पूर्ण अधिकार रखने वाली चिकित्सक थीं। डॉ.कविता जी की ६ महीने चिकित्सा के बाद मेरी श्रीमती जी काफी हद तक ठीक हो गईं और चलने फिरने में समर्थ हो गईं। त्रिपाठी जी से मैंने पूछा कि आपको कविता जी के बारे में कहां से जानकारी मिली- त्रिपाठी जी ने बताया श्री सत्यदेव सैनी ने मुझे डा.कविता की जानकारी दी थी। मैंने मन ही मन सैनी जी का आभार माना और कोटिशः धन्यवाद भी दिया।

इस घटना के दस वर्ष बाद सैनी जी के निधन के दो दिन पहले ही श्री त्रिपाठी जी ने ज्वालापुर से मुझसे फोन करके कविता जी के निवास स्थान का पता पूछा था और कहा सैनी जी इन दिनों काफी बीमार हैं। उनके लिए डॉ. कविता का पता लगाकर उनसे मिलना है। मैंने कविता जी के घर का पता त्रिपाठी जी को बताया। त्रिपाठी जी ने हरिद्वार से आकर आलमबाग में डॉ. कविता जी का पता लगाकर उनसे भेंट की थी।

किन्तु इस बार काफी देर हो चुकी थी। सैनी जी को डॉ.कविता से मिलने के बाद भी बचाया नहीं जा सका और वे ०५.०१.१६ को प्रातःकाल अंतिम यात्रा पर निकल पड़े। इं.सत्यदेव सैनी एक धर्मोपदेशक, सेवा सहायता कार्य में निपुण अपने गरिमापूर्ण व्यक्तित्व के लिए सदैव याद किये जायेंगे। मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि!

शुभाकांक्षा

पत्रिका के दिसम्बर अंक के मुखपृष्ठ

पर उ.प्र.विधानसभा के अध्यक्ष मान्यवर हृदयनारायण दीक्षित का वह लेख है, जो सबरीमाला पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से पहले का है। अदालत का निर्णय लेखक की भावनाओं के अनुकूल आ चुका है। उत्तर प्रदेश का यह सौभाग्य है कि उसे विधान सभा अध्यक्ष के रूप में भारतीय संस्कृति का गम्भीर विद्वान् मिला है। इन पंक्तियों के लेखक का मत भी इसी अंक में इस विवादास्पद विषय पर शुभाकांक्षा में सम्पादक महोदय ने न केवल प्रकाशित किया है, अपितु मुझे फोन करके मेरे मत पर अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी। वेद ज्ञान के मूल हैं किन्तु इनके अर्थ से परिचय बहुत थोड़े लोगों को है। अतः इसके अर्थ का पद्यानुवाद मुझ जैसे पाठकों को लाभकारी रहता है किन्तु यदि अनुवाद में काव्यात्मक गुण भी आ जायें, तो सोने में सुहागा ही कहेंगे। श्रीयुत् अमृत खरे का यह अनुवाद अनूठा एवं स्तुत्य है। राजा लक्ष्मण सिंह ने कभी 'अभिज्ञान शकुन्तलम्' का हिन्दी अनुवाद किया था, जिसके छन्द संस्कृत ज्ञान से अनभिज्ञ पाठकों को कण्ठस्थ हो गये थे। सम्पादकीय में अटल जी की तुलना भीष्म से करने की बात का खंडन उचित ही है क्योंकि महान् ज्ञानी, अप्रतिम योद्धा, दृढ़प्रतिज्ञ, इच्छामृत्यु होने पर भी भीष्म किसी के लिए आदर्श नहीं बन सके। अतः स्वर्गीय हजारी प्रसाद द्विवेदी को लिखना पड़ा कि 'भीष्म को क्षमा नहीं किया'। यह विचित्र संयोग कि देवत्व के गुणों से युक्त होने पर भी भीष्म आदर्श न बन पाये। पत्रिका के इस अंक से यह भी विदित हुआ कि सम्पादक महोदय का व्यक्तित्व बहुआयामी है। वे योग्य प्राध्यापक व ओजस्वी वक्ता, लेखक कवि के साथ राजनीति के अखाड़े की मिट्टी से भी स्नान कर चुके हैं। मेरी उनको ढेर सारी बधाई। उनका पौरोहित्य रूप व सम्पादकीय कौशल इस समय समाज के सम्मुख है। स्थायी स्तम्भ 'मनुष्य का विराट रूप', 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' तथा 'काव्यायन' सभी प्रभावी हैं। नीरज जी एवं कुँवर बेचैन जैसे स्थापित कवियों के साथ सभी की कविताएँ प्रभावी हैं। मैंने सेनापति के ऋतु वर्णन पर शोधकार्य किया था, अतः रमा आर्य 'रमा' का शीतऋतु का वर्णन कुछ ज्यादा प्रभावित कर रहा है।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा

सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

आर्य लोक वार्ता दिसम्बर अंक में

आर्ष विद्वान् श्री हृदय नारायण दीक्षित का सबरीमाला मन्दिर विषयक आलेख शास्त्र सम्मत है। इस सन्दर्भ में माननीय न्यायालय का निर्णय आ चुका है, तदनुसार मन्दिर प्रवेश में स्त्रियों पर कोई रोक नहीं है तथापि विडम्बना है कि कुछ कट्टरपंथी अभी भी सबरीमाला मन्दिर में दो महिलाओं के प्रवेश के बाद से केरल जल रहा है। कट्टरपंथियों का कोई धर्म नहीं होता और उन पर नीति दर्शन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वही कहावत 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'। 'विनय पीयूष' में श्री अमृत खरे के सुन्दर काव्यानुवाद ने रससिक्त कर दिया। उन्हें सादर बधाई। अटल जी पर सम्पादकीय चिन्तन समसामयिक, प्रेरक तथा स्वागतयोग्य है। व्यक्ति विशेष में श्री लक्ष्मण आर्यमुनि का आर्य समाज के प्रति समर्पण अनुकरणीय है। उनके प्रति आपकी शब्दानुशंसा श्लाघनीय रही। कालजयी गीत स्तम्भ में गोपाल दास नीरज का गीत श्रांगारिक दर्शनिकता से परिपूर्ण अत्यंत मनोहारी है। सिद्ध गीतकार डॉ.कुँवर बेचैन के अतिरिक्त दयानन्द जड़िया 'अबोध', 'हर्ष', डॉ.शितिकण्ठ, डा.कैलाश निगम, रामा आर्य 'रमा' की भी काव्य रचनाएँ स्तरीय हैं। पत्र की निरन्तरता, स्तरीयता और समयबद्धता बनाए रखने हेतु पत्र-समूह के श्रमसाध्य समर्पण के लिए साधुवाद। पत्र मानव को आत्मात्थान के लिए सतत प्रेरित करता रहे, इस कल्याणकारी शृभकामना के साथ आंग्ल नववर्ष की बधाई-

दयानन्द स्वामी की शिक्षा, कट्टरता दें छोड़।
हम 'सत्यार्थ प्रकाश' खोज लें, तम कारा तोड़।
सुख-दुःख, मुक्ति-युक्ति के साधन स्वयं जुटाना है,
'ओं भूर्भुवः स्वः' सद्बुद्धि दे, जीवन-पथ दें मोड़।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता दिसम्बर अंक मिला।

इसमें 'मन्दिर प्रवेश से स्त्रियों को रोकना ईश्वर की अवमानना है' लेख में श्री हृदय नारायण दीक्षित ने सुन्दर विचार दिए हैं परन्तु वास्तविकता अभी कोसों दूर है। ज्ञान-विज्ञान के इस युग में भी स्त्री के प्रति पुरुषों की संकीर्ण सोच से दुःख होता है। ईश्वर ने तो स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं किया परन्तु मनुष्य ने स्त्री को अब भी पुरुष के बराबर नहीं माना। यह अन्तर मन्दिर प्रवेश को लेकर भी है। न्यायालय के स्पष्ट निर्णय के बाद भी स्त्री को मन्दिर में प्रवेश नहीं मिल रहा है, यह देश के लिए डूब मरने वाली बात है। सरकार को चाहिए कि वह सती-प्रथा विरोधिनी भांति ही स्त्री को सशक्त करे तथा पूजा स्थलों को धर्मान्धों से मुक्त करे। स्मृतिशेष अटल जी पर आपका सम्पादकीय और प्रेम चन्द्र शर्मा का आलेख अत्यंत स्तरीय लगे। अन्य स्तम्भों 'सत्यार्थ प्रकश वार्ता', 'वेदांजलि', 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' आदि में अत्यंत उपयोगी जानकारी दी गयी है। काव्यायन पृष्ठ पर एक से बढ़कर एक कविताएं हैं जो रोचक और प्रेरणादायी हैं। सभी रचनाकारों को बधाई। अंग्रेजी नववर्ष के आगमन पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

-नमिता वैश्य

मसकनवा, खालेगांव, गोण्डा, उ.प्र.

***

'आर्य लोक वार्ता' दिसम्बर २०१८ अंक मिला। इसका प्रथम आलेख उ.प्र. विधान सभाध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित द्वारा प्रस्तुत 'मंदिर में प्रवेश से स्त्रियों को रोकना ईश्वर की अवमानना है' एक सामयिक ज्वलंत समस्या पर आधृत है। इसमें शबरीमाला मंदिर में महिलाओं के प्रवेश की वर्जना का खण्डन ऋग्वेद की ऋचाओं द्वारा सप्रमाण किया गया है, जो सर्वथा संगत और स्वागत योग्य है। 'विनय पीयूष' शीर्षक से यजुर्वेदीय मंत्र का अतीव सरस सुन्दर छायानुवाद श्री अमृत खरे की लेखनी का समुज्जल प्रमाण है। इस अंक का सम्पादकीय तो

अति विशिष्ट है। स्व. प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविता की एक पंक्ति 'हार नहीं मानूंगा' के शीर्षक से लिखित इस महत्वपूर्ण आलेख में भारतीय राजनीति के 'भीष्म पितामह' कहे जाने वाले अटल जी के अपराजेय व्यक्तित्व को 'भीष्म पितामह' के बजाय 'धनुर्धर पार्थ' कहना अधिक संगत सिद्ध करते हुए लेखक ने अपना स्वानुभूतिमय ऐसा संस्मरण भी प्रस्तुत किया है जो अटल जी के जो अटल जी के ओज तेज भरे वक्ता और सहज, सरल आदर्श महामानव के स्वरूप को उद्घाटित करता है। आचार्य दीपंकर कृत 'दयानन्द चरितम्' का तो कहना ही क्या! महर्षि के महनीय व्यक्तित्व के कर्मण्य योद्धा रूप का उद्घोषक है। श्री लक्ष्मणमुनि आर्य विषयक वृत्तान्त भी अतीव प्रेरणाप्रद है, मनोग्राही है। 'शुभाकांक्षा' के अन्तर्गत विभिन्न विचारकों द्वारा व्यक्त मंतव्य इस पत्र की उपयोगिता और महत्ता के द्योतक हैं। श्री आनन्द कुमार द्वारा 'मनुष्य का विराट रूप' (धारावाहिक) सर्वथा पठनीय और मननीय है। शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी की व्याख्यानमाला-४ 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' आज के रूढ़िवाद को वास्तविकता से अवगत गराने में समर्थ है। 'काव्यायन' शीर्षक के अन्तर्गत श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', श्री दयानन्द जड़िया 'अबोध', सुश्री रमा आर्य 'रमा', डॉ.कैलाश निगम, श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', प्रसिद्ध कवि डॉ.कुँवर बेचैन और गीतों के राजकुमार श्री गोपालदास 'नीरज' की रचनाएँ अतीव प्रेरणाप्रद एवं हृदय-स्पर्शी हैं। इसके अतिरिक्त आर्य समाज से सम्बद्ध आयोजनों, कार्यक्रमों से सम्बन्धित विभिन्न सूचनाएँ एवं श्रेष्ठ साहित्यकारों से सम्बन्धित संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी अत्यंत आकर्षक हैं। कुल मिलाकर यह अंक भी अपने पूर्व के अंकों की भांति ही उच्च स्तरीय सामग्री से समृद्ध है। ऐसे बहु आयामी ज्ञान वर्द्धक उपयोगी अंक हेतु अनेक हार्दिक मंगल कामनाएँ।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

78, त्रिवेणी नगर, डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का दिसम्बर अंक

प्राप्त हुआ। दिसम्बर मास पूर्व प्रधान मंत्री 'भारत रत्न' स्व. अटल, बिहारी वाजपेयी का जन्म मास है, अतः इस बार के अंक में उन पर केन्द्रित प्रचुर सामग्री है। 'हार नहीं मानूँगा' शीर्षक से सम्पादकीय में अटल जी से सम्बन्धित कई अच्छे संस्मरण हैं। साथ ही प्रेम चन्द्र शर्मा का लेख 'स्मृति शेष अटल जी' जो अटल जी की पंक्तियों-'मैंने जन्म नहीं मांगा था, किन्तु मरण की माँग करूँगा' से आरम्भ हुआ है, भी अच्छा है। 'काव्यायन' में स्व.नीरज जी की कालजयी रचना 'काँटे बुहार दूँगा' अच्छी गीत रचना है जिसे हर व्यक्ति को जीवन में उतारने की आवश्यकता है। अन्य कविताएँ व लेख भी पठनीय हैं। ज्ञानवर्द्धक सामग्री के चयन और प्रकाशन हेतु सम्पादक जी बधाई के पात्र हैं।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

ज्ञाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-226003

***

अक्षर लोक

प्रेय से श्रेय की ओर (लेख संग्रह)
रचनाकार : 'सत्यार्थदूत' सरोज आर्या (वर्मा)
प्रस्तुति : पेपरबैक/पृष्ठ संख्या १४२
मूल्य : 'कोठारी परिवार' की ओर से नि:शुल्क
प्रकाशक : सेवानन्द सरस्वती, वैदिक धम्र प्रचार प्रसार न्यास, ४८७, नमक की मण्डी, किशन पोल बाजार, जयपुर (राजस्थान)

पाठकों को प्रेय से श्रेय की ओर ले जाने के उद्देश्य से लेखिका सरोज आर्या ने इस ग्रन्थ की रचना की है। इसमें ईश्वर के वास्तविक स्वरूप, कार्य तथा उपकार का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। स्वाध्याय तथा श्रम से लेखिका ने श्रेय ज्ञान को भलीभांति समझने और समझाने का इस ग्रन्थ में उपक्रम किया है। ईश्वर उपासना में आने वाली बाधाओं का वर्णन करते हुए ईश्वर उपासना में मन लगाने के उपायों को भी सुझाया गया है।

'प्रेय से श्रेय की ओर' पुस्तक पठनीय, मननीय और निस्सन्देह संग्रहणीय है।

खद्योत (काव्य–संग्रह)
रचनाकार : पीयूष रत्न पाण्डेय
प्रस्तुति : पेपरबैक/पृष्ठ संख्या १२८
मूल्य : दो सौ रुपये
प्रकाशक : सागर संस्कृति–सांस्कृतिक संस्थान मातृश्री, ४१७/१०४४, निवाजगंज, चौक, लखनऊ–२२६००३

'खद्योत' नैसर्गिक काव्य प्रतिभा के धनी पीयूष रत्न पाण्डेय की तिरपन किशोर काल की प्रारम्भिक कविताओं का संग्रह है, जो भिन्न-भिन्न भावभूमियों पर आधारित है। 'खद्योत' की तरह यह कविताएँ जहाँ-तहाँ प्रकाश करती सी दीखती हैं और भिन्न-भिन्न भावनाओं, संवेदनाओं और अनुभूतियों को जगमगाती चलती हैं।

पीयूष रत्न पाण्डेय लिखते हैं कि मन में कुछ विचार थे, कुछ भाव थे! आत्मीय जनों के प्रति कुछ भावनाएँ थीं, कुछ संवेदनाएँ थीं! समय-समय पर फूटती रहीं, लिखता रहा! कवि पीयूष का यह लेखन पाठकों-श्रोताओं को आकर्षित करने और भावभूषित करने में समर्थ है।

आर्य कन्या की सूझ–बूझ (कथा)
रचनाकार : महात्मा प्रभुआश्रित महाराज
प्रस्तुति : पुस्तिका/पृष्ठ संख्या १६
मूल्य : अघोषित
प्रकाशक : आर्यावर्त्त प्रकाशन 'सौम्या सदन' गोकुल विहार, अमरोहा (उ.प्र.)

प्रस्तुत पुस्तिका 'आर्य कन्या की सूझ-बूझ' महात्मा प्रभुआश्रित महाराज की प्रसिद्ध पुस्तक 'घर-वर की खोज' का अन्तिम कथात्मक अंश है। 'आर्य समाजी परिवार' की एक विदुषी कन्या का विवाह एक 'सनातनी परिवार' के बेटे से सम्पन्न होता है। ससुराल में वह कैसे 'धर्मध्वजा' फहराने और सबका मन मोहने में सफल रहती है, यही इस रोचक कथा-पुस्तिका का सार है।

ऊर्जस्वी (गृह पत्रिका)
सम्पादक : सुरभि साळी
प्रस्तुति : पत्रिका/पृष्ठ संख्या ४२
मूल्य : अघोषित
प्रकाशक : न्युक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड, विक्रम साराभाई भवन, छठा तल, दक्षिणी स्कंध, राजभाषा अनुभाग, अणुशक्ति नगर, मुंबई–४०००९४

'ऊर्जस्वी' न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया की गृह पत्रिका है। पत्रिका का 'ऊर्जस्वी' नाम सुन्दर, आकर्षक और सार्थक है। इसमें तकनीकी, गैर तकनीकी, स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख, कविताएं रिपोर्ट, महत्वपूर्ण झलकियां और शुभकामनाओं को शामिल किया गया है। यह पत्रिका संस्था और संस्था के सदस्यों को हिन्दी के माध्यम से आपस में जोड़ने का कार्य बखूबी कर रही है तथा सभी को अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान कर रही है।

धारावाहिक-(89)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

४-जाल में मत फँसिये

श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में एक सारगर्भित लघुकथा है। किसी वन में एक कबूतर अपनी कबूतरी के साथ बड़े सुख से रहता था। दोनों में अत्यधिक स्नेह था। एक क्षण के लिये भी वे एक दूसरे से अलग नहीं होते थे। कबूतर नाममात्र को ही कबूतरी का स्वामी था। वास्तव में वह उसका दास था। कुछ दिनों में कबूतरी ने अंडे दिये। दोनों के आनन्द का ठिकाना न रहा। समयानुसार उन अंडों से सुन्दर बच्चे निकले। कपोत कपोती ने बड़े प्रेम से उनका लालन पालन किया। इस प्रकार वे दिन प्रति दिन माया-मोह के जाल में फँसते ही चले गये।

एक दिन कबूतर-कबूतरी बच्चों को घोंसले में छोड़कर चारा लाने के लिये कहीं दूर चले गये। इधर एक बहेलिये ने उन बच्चों को पकड़ने के लिये जाल बिछा दिया। सब के सब उसमें फँस गये। शाम को लौटने पर कबूतर-कबूतरी ने अपने प्राणप्यारे बच्चों को मृत्यु-पाश में बँधे देखा। कबूतरी शोक से विह्वल होकर रोने और छटपटाने लगी। मोह-वश वह अपने बच्चों के पास गई और स्वयं जाल में फँस गई। कबूतर पर तो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। बच्चे तो काल के गाल में जा ही चुके थे, प्यारी कबूतरी भी सदा-सर्वदा के लिये हाथ से जाती रही। वह उनके छुड़ाने का प्रयत्न न करके छाती पीट-पीटकर रोने-चिल्लाने लगा-हाय, मेरा तो बना-बनाया घर उजड़ गया, अब मैं कैसे रहूँगा। मेरी पतिव्रता पत्नी मुझे इस सूने घर में अकेला त्याग कर प्यारे बच्चों के साथ स्वर्ग को जा रही है। इनके विना मेरा जीवित रहना व्यर्थ है।

इस तरह विलाप करते-करते वह मूढ़ भी जाल में जाकर फँस गया। फँसने के बाद उसे अपनी गलती मालूम हुई। वह बन्धन से छुटकारा पाने के लिये छटपटाने लगा। तब तक बहेलिये ने आकर एक-एक को पकड़ लिया।

इस कथा से एक शिक्षा तो यह मिलती है कि मनुष्य को माया-मोह में इतना नहीं फँसना चाहिये कि उसके कारण बाद में दुःख भोगना पड़े। सांसारिक विषयों में अत्यधिक आसक्ति- चाहे वह धन की हो या गृह की अथवा सुख की- दुःखदायिनी होती है। उससे मनुष्य बँध जाता है, अथवा यह कहिये कि जगत् के जंजाल में फँस जाता है। भव-वैभव को भोगना चाहिये, किन्तु यथासंभव निरासक्त होकर।

दूसरी शिक्षा यह मिलती है कि विपत्ति में मोहित होने या छटपटाने से कोई उससे छुटकारा नहीं पा सकता। भूल या उलझन को सुधारने और सुलझाने में बुद्धिमानी है। संकट में पड़कर पछताने की अपेक्षा यह अच्छा है कि मनुष्य उसमें से निकलने का प्रयत्न करे। घबड़ाने से झंझट बढ़ ही जाते हैं।

५-तौल कर बोलिये

एक बार हनुमान जी के मुख से रामायण की कथा सुनकर अर्जुन ने कहा- राम ने समुद्र पर पत्थर का पुल बनाकर बड़ी भूल की; मैं होता तो पल भर में तीरों का पुल बना देता।

हनुमान् ने कहा-राम जैसे महाधनुर्धर के लिये तीरों का पुल बनाना कठिन नहीं था, परन्तु उस परिस्थिति में उन्होंने जो किया वही उचित था। राम की विशाल सेना का भार तीरों का पुल नहीं सम्हाल सकता था।

अर्जुन अहंकारपूर्वक फिर बोला-उससे कहीं बड़ी सेना मेरे बाणों के पुल पर पार हो सकती है।

हनुमान ने फिर कहा-अच्छा, किसी सरोवर पर तुम एक ऐसा पुल बना कर देख लो कि वह एकमात्र मेरा ही भार सम्हाल लेता है या नहीं।

अर्जुन ने पास के एक बड़े ताल पर देखते ही देखते तीरों का जाल बिछा दिया और हनुमान् जी से उस पर दौड़ने को कहा।

महावीर हनुमान् महावेग से उस पर कूदे। उनके एक ही प्रहार से अर्जुन का शरसेतु टूट कर बिखर गया। साथ ही अर्जुन का दर्प भी नष्ट हो गया।

अर्जुन ने बिना सोचे-विचारे राम की आलोचना की थी। उसके लिये उसे लज्जित होना पड़ा। बहुत-से लोग ऐसी ही भूलें करते हैं। दूसरे के कार्य की आलोचना करते समय वे उसकी भूलें खूब दिखाते हैं, और बड़े-बड़े सुझाव देते हैं, लेकिन स्वयं जब वैसा ही कार्य करने चलते हैं तो उसका आधा भी नहीं कर पाते। उस समय उन्हें नीचा देखना पड़ता है। कल्पना के महल बनाने वाले एक झोपड़ा भी नहीं बना सकते। लम्बी-चौड़ी बातों से और अपनी डींग हाँकने से मनुष्य का बड़प्पन नहीं सिद्ध होता। बुद्धिमान् पुरुष को चाहिये कि वह तौलकर बोले- ऐसी बात न कहे जो उसके काम से हल्की साबित हो। किसी की आलोचना करते समय उस परिस्थिति को भी देखना चाहिये, जिसमें उसे कोई कार्य करना पड़ा है। किसी के कन्धे को दुर्बल कहने के पूर्व उस पर रक्खे हुए भार का अनुमान करना भी आवश्यक है।

६-अहंकार से काम नहीं होता

कहते हैं कि राम से समुद्र पर सेतु बाँधने का आदेश पाकर वानर लोग बड़े गर्व के साथ शिला-खंड ले-लेकर समुद्र में डालने लगे। उन्हें अपने बल और कार्य-कौशल का अभिमान तो था, लेकिन, समुद्र की शक्ति का ज्ञान-ध्यान नहीं था। वे तो यही सोचते थे कि देखते-देखते वे सारे समुद्र को पत्थरों से पाट देंगे। वानर वीरों ने बड़े-बड़े पत्थर समुद्र में डाले, लेकिन सब के सब पानी में डूब गये। घोर परिश्रम के बाद उन्होंने देखा कि एक भी पत्थर अपने स्थान पर नहीं टिका। उनका अहंकार पत्थरों के साथ ही डूब गया। सब हताश होकर राम के पास पहुँचे और बोले-महाराज, हम इस कार्य के लिये असमर्थ हैं। राम ने मुस्करा कर कहा-जाओ, प्रत्येक पत्थर पर मेरा नाम अंकित करके पानी में डालो; जिस पत्थर पर मेरा नाम रहेगा समुद्र उसका तिरस्कार नहीं करेगा। ऐसा ही हुआ। वानरों ने मान लिया कि उनके बल पराक्रम से नहीं, राम की कृपा से कार्य सिद्ध हुआ है। यह कथा चाहे सच्ची हो या झूठी, हमें तो विद्वद्वर व्यास की इस नीति से काम लेना है-

अप्युन्मत्तात्प्रलपतो बालाच्च परिजल्पतः।
सर्वतः सारमादद्यादश्मभ्य इव कांचनम्।।

-महाभारत

अर्थात्-'निरर्थक बकते हुए और पागल तथा कच्चा-पक्का बोलते हुए बालक के वचनों से भी, पत्थरों से सुवर्ण के समान, सार ग्रहण किया जा सकता है।'

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला-5

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

कृष्ण जी क्या नचनिए थे? हर्गिज नहीं। वह आप्त पुरुष थे, योगी थे। लोगों ने सोचा-समझा नहीं। उसी का दुष्परिणाम आज देख लीजिए। क्या नाच की कोई कमी है? आज तो हमारी सरकार के बड़े से बड़े नेता नाच के हामी हैं। हमारे नेहरू साहब भी नाचते हैं। लोग कहा करते हैं, नचनियों का राज्य हो रहा है। लोग कहते हैं, हमें सुनना पड़ता है। प्रत्येक सांस्कृतिक समारोह में नाच पहले होता है। नाच ही सब जगह प्रधान है। यह नाच नहीं, नाश है जो हो ही रहा है।

राज्य नाच से कायम नहीं रहते। मैं कहता हूँ, बुद्धिमान् सारे कहते हैं और इतिहास इसकी पुष्टि करता है। राज्य बलवान् और नीतिमान् पुरुष किया करते हैं। तो कृष्ण जी के चरित्र के अनुसार अपना चरित्र बनाइए।

चित्र के बारे में एक बात यह विशेष कहनी है कि किसी के भी चित्र में उनके सारे चरित्र नहीं आते। क्या जो चित्र कृष्ण जी का घर में लगा है उसमें कृष्ण जी के सारे चरित्र चित्रित हैं या क्या किये जा सकते हैं? क्या स्वामी दयानन्द जी का सारा चरित्र एक चित्र में आ जाता है? नहीं न! कोई भी चित्र ऐसा नहीं है जिसमें चित्रित व्यक्ति का सारा चरित्र आ जाए। तो चित्र से व्यक्ति को याद करके उसके चरित्र को जानने की उत्कण्ठा होती है और फिर चरित्र जानकर अपने को वैसा बनाने की इच्छा। तो कृष्णचन्द्र जी के जीवन से शिक्षा लेकर भारत की उन्नति करें। रामचन्द्र जी के चरित्र को भी ध्यान में रखें। आज भाई-भाई आपस में छोटी-छोटी बातों के लिए लड़ते-फिरते हैं किन्तु राम ने अपने छोटे भाई भरत के लिए सारे अयोध्या के राज्य को ठोकर लगा दी। तो आप राम की तरह से भाई के लिए त्याग करना सीखें। अगर राम के चरित्र का हम पर इतना भी प्रभाव न पड़ा तो रामायण के पाठ का क्या लाभ?

इन सभी बातों से आप अन्दाजा लगाइए कि मैं कहाँ तक आपके साथ हूँ। जितनी बात बुद्धिपूर्वक होगी, मैं आपके साथ-साथ वहाँ तक मानूँगा। आगे मैं नहीं मानूँगा। तो राम और कृष्ण की सच्ची सेवा यह है कि आप उनके चारित्रिक गुणों को जानकर अपने गुण भी वैसे ही बनाने का प्रयत्न करें, वैसे ही गुण धारण करें। यदि आप उनके ऊपर जलेबी रखने लगें, लड्डू रखने लगें या उन पर पानी डालने लगें तो यह उनकी पूजा नहीं है, न यह उनकी सेवा है। गुणों को धारण करना ही उनकी सेवा है।

मैं अपने जन्म स्थान (नीमच छावनी) की बात सुनाता हूँ। वहाँ जब लोग मन्दिरों में जाते हैं तो मन्दिर में घुसनेसे पहले वहाँ लटका हुआ घण्टा बड़ी जोर से बजाते हैं और घण्टा बजाकर बोलते हैं, 'भेज छप्पन की चौथाई' अर्थात् १४ करोड़ भेज। मैंने उनसे पूछा-'भाई तुम सीधे से १४ करोड़ क्यों नहीं मांगते? छप्पन करोड़ की चौथाई क्यों कहते हो?' बोले-'अजी घण्टा तो यों बजाते हैं कि महादेव जी नशे में रहते हैं जरा जाग जायें, नशा कम हो जाय और वे हमारी बात सुन लें। छप्पन करोड़ की चौथाई यों कहते हैं वे भोले हैं, उन्हें याद तो कुछ रहता नहीं है। छप्पन करोड़ ही याद रहेगा, चौथाई याद नहीं रहेगी तो छप्पन करोड़ ही दे देंगे।'

देखा आपने इन भक्तों को? अपने भगवान् को भी धोखा दे रहे हैं।

एक व्यक्ति है जिसका कोई सगा है और वह मर गया है। डाक्टर की दवाई जो उनके लिए लाई गई थी वह भी रखी हुई है। आप जानते हैं, लोग यथा शक्ति अपने मरीज को बचाने की सारी कोशिशें करते हैं। डाक्टर के यहाँ से लाई हुई दवा में से खुराक बाकी थी। वह रखी रही। रोगी मर गया। मुहल्ले में सूचना भिजवा दी गई कि हमारे अमुक रिश्तेदार गुजर गए हैं। श्मशान भूमि में उन्हें उठाने को लोग इकट्ठा हो गए। जब उनको अर्थी पर रखा गया तो ये दवा ले आए और दवा लाकर उनके मुंह में डालने लगे। सब लोग चिल्ला उठे कि-'मूर्ख तेरी अक्ल मारी गई है। अब तो ये मर गए, अब दवाई पिलाने का क्या लाभ?' बोला-'मैं लाया तो इन्हीं के लिए था।' लोगों ने कहा-'लाया तो इन्हीं के लिए था लेकिन अब तो मर गए। जिन्दा तो हैं नहीं, तू इन्हें अब क्या दवाई पिलाता है? अब क्या ये दवाई ली लेंगे?' फिर वह बोला-'यदि ये नहीं पीते तो आप पी लीजिए दवा के पैसे तो प्राप्त ही होने चाहिए।' लोग कहने लगे कि तू बड़ मूर्ख आदमी है, हम दवाई क्यों पी लें हम कोई रोगी हैं जो दवाई पीवें? तो उसने कहा-'इसीलिए तो पिला रहा हूँ। आप पिलाने क्यों नहीं देते?' इन सब बातों को मान लीजिए कोई आर्य पुरुष सुन ले और यह कह दे कि जो दो-चार घण्टे पहले जीवित था और अब मर गया है उसे दवाई पिलाने वाले को तो आप बेवकूफ बता रहे हैं। जो कभी जीवत थे ही नहीं, प्रारम्भ से ही मन्दिर में पत्थर के रखे हैं उन्हें जो लोग खिलाते-पिलाते हैं, और लड्डू-पेड़े चढ़ाते हैं वे कितने बड़े मूर्ख होंगे। इसको Rule of three से समझदार लोग लगा लें। अक्ल व विचार वाले ही सोचें और विचारें। भगवान् की उपासना क्या लड्डू और जलेबी चढ़ाने से होती है? नहीं! बिल्कुल नहीं!! यह उपासना का तरीका नहीं है!!!

मूर्ति के रखने में कोई हर्ज नहीं है। मैंने पहले भी कहा था कि आप दो मूर्तियां बनवाएं, एक स्वयं रखें और एक मुझे दें। कह दीजिए लोगों को कि एक मूर्ति रामचन्द्र ले गया। लोग मुझसे पूछेंगे कि क्या करते हैं आप कृष्ण की मूर्ति का? मैं उत्तर दूँगा कि मूर्ति देखकर मैं उनके चरित्र को याद करता हूँ कि उन्होंने कितना बड़ा काम किया, कितने बड़े विद्वान और नीतिमान् पुरुष थे, जो सारी सभा में वे ही प्रधान चुने गए। इसलिए हमको भी ऐसा ही बनना चाहिए। मैं यह नहीं सीखूंगा कि उनके ऊपर लड्डू-जलेबी चढ़ाने लगूं कि चिड़ियाएं आएं और उन्हें खा जाएं, सारी मूर्ति को खराब कर जाएं। जिन लोगों ने यह ढंग अपना रखा है कितना गलत काम किया है इसका कोई अन्दाजा हो सकता है? यह सरासर लोग भूल किए जा रहे हैं। ईश्वर की ऐसे पूजा नहीं होती।

एक साहब ने मुझसे पूछ लिया कि 'पण्डित जी आप अपने पिता जी के चित्र को क्या समझते हैं?' मैंने कहा- 'इतना और इसमें जोड़ दीजिए कि जिसको मैंने ही खींचा हो।' मैंने उत्तर दिया-

'क्योंकि चित्र मैंने बनाया है इसलिए मैं चित्र का बाप हूँ। चित्र का कर्त्ता मैं हूँ, इसलिए मैं चित्र का बाप हूँ। जो चीज मुझसे उत्पन्न हुई है, वह मेरे बच्चे की जगह तो है ही।' उत्तर सुनकर कहने लगे कि 'हां, उत्तर तो ठीक हो गया।'

तो मैंने निवेदन किया कि आप मूर्तियां रखें यदि रखना चाहें तो। किन्तु ऐसे रखें जैसे मैंने बताया है। कोई हानि नहीं है। मैं तो इनकी आवश्यकता नहीं समझता। यदि आप समझते हैं तो अवश्य रखें और अपना चरित्र उन जैसा बनाएं तभी कुछ लाभ होगा। वैसे कभी भी एक ही चित्र से सारे चरित्र प्रकट नहीं किए जा सकते। आज तक इस प्रकार के चित्रण में कोई सफल नहीं हुआ है। तो चित्र देखकर जिनका वह चित्र है उनके शुभ गुणों को धारण करने का प्रयत्न करें।

बहुत से लोग मूर्तियों के सामने नाचते हैं, गाते हैं, उनके सामने हाथ जोड़ते हैं। मूर्तियों में ज्ञान कोई नहीं है तब भी वे करते हैं। मान लीजिए, कक्षा में कोई मास्टर सो रहा हो और कुछ लड़के उन सोते हुओं से छुट्टी मांगकर चले जाते हैं, कोई पेशब करने चला गया, कोई पानी पीने। जब लड़के लौट आये तो मास्टर ने पूछा-'तुम कहां गए थे?' लड़के बोले-'जी, आपसे पूछकर पानी पीने गये थे' कोई बोला-'पेशाब करने गये थे।' मास्टर ने पूछा-'कब पूछकर गए थे?' लड़कों ने उत्तर दिया-'जब आप सोए हुए थे।' मास्टर ने सभी को ताड़ना की और कहा कि मूर्खों वह अनुमति लेने का समय था? हम तो सोए हुए थे, हमें क्या पता क्या हो रहा है। खबरदार! अब कभी ऐसे मत जाना। तब वे मूर्ति जो जड़ हैं उनके ऊपर हाथ जोड़ने या नाचने का क्या प्रभाव हो सकता है? उनके सामने ये क्रियाएं करना व्यर्थ है, निरर्थक है। उसका कोई लाभ नहीं है।

सच्ची उपासना क्या है, यह अब मैं आपकी सेवा में वर्णन करूँगा। थोड़ा ध्यान से सुनिए-

मैंने आपको अपने व्याख्यान के पूर्व भाग में बताया था परमेश्वर (चेतनों में) और प्रकृति (जड़ पदार्थों में) दोनों सर्वथा पूरे हैं, इन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है।

प्रकृति कहती है, यदि तुम मुझसे फायदा उठाना चाहो तो उठा लो। मेरा सही प्रयोग करोगे तो तुम्हें लाभ होगा। यदि गलत ढंग से मेरा प्रयोग किया तो हानि होगी। मान लीजिए, चूल्हे के पास कोई देवी खाना बना रही है। यदि वह देवी फूहड़पन से काम करेगी, उसके कपड़े फैले होंगे तो आग लग जायेगी और वह खाना बनाने वाली जल जायेगी या जल कर मर जाएगी क्योंकि आग जरा भी पक्षपात नहीं करेगी और जला देगी। अग्नि एक प्राकृतिक पदार्थ है और उसका ठीक प्रयोग नहीं किया गया इसलिए उससे हानि हुई। प्राकृतिक पदार्थ न अपने को जानते हैं तो वे जीवात्मा से कहते हैं कि तुम्हीं सोच-समझकर लाभ उठा लो, हमें कुछ पता नहीं है। *(क्रमशः)*

काव्यायन

मंलमय नव वर्ष

❑अखिलेश निगम 'अखिल'
आई.पी.एस.

जीवन में उल्लास हो, सुख शान्ति का वास हो,
नव-वर्ष में उन्नति का चमके सितारा।
हो राष्ट्र का उत्थान, नित शुभ मंगलगान,
बहे प्रेम ओर एकता की पावन धारा।
देश और समाज हित आप कुछ कीजिए,
नित जगे ज्योति ऐसी मिटे तम की कारा।
'अखिल' की शुभकामना नव वर्ष में यही,
आपको मिले प्रतिपल ईश का सहारा।।

–पुलिस अधीक्षक, उ.प्र.सर्तकता अधिष्ठान, विभूति खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती पर

शत-शत नमन विवेकानन्द

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

शत-शत नमन विवेकानन्द।
रचे राष्ट्र-उन्नति के छन्द।
अन्ध-विश्वास पाश में जकड़े, लोग पड़े अज्ञान-तिमिर में,
दुःख शोषण अन्याय सह रहे,काँप रहे जो पाप-शिशिर में।
भूखे-पीड़ित जन के तोड़े,
नव जाग्रति लाकर भय-फंद।
निज विद्वतापूर्ण भाषण से, ओत प्रोत कर दिया शिकागो,
जनमानस को उद्वेलित कर, कहा-युवाओ! अब तो जागो।
उठो चलो, मत रुकना जबतक,
मिले न लक्ष्य-पुष्प-मकरन्द।
'रामकृष्ण मिशन' स्थापित कर, किया गुरु-सन्देश प्रचार,
जन-जन में नव आशा भरकर, किया सुसंस्कृति का संचार।
भारत में बन्धुत्व-भाव की,
ज्योति जलायी अमर-अमन्द।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–22

छब्बीस जनवरी

❑नमिता वैश्य

छब्बीस जनवरी आई है,
गणतंत्र दिव शुभ लाई है।
जनगणमन के स्वर से गुंजित, भारत माँ की अँगनाई है।
सम्मानित अपना संविधान, जनता ने सत्ता पाई है।
सक्षम-सशक्त गणतंत्र हुआ, जन-जन प्रिय भाई-भाई है।
सीमा पर सैनिक डटे हुए, नित राष्ट्र वन्दना गाई है।
गा रहा गगन 'वन्दे मातरम्' धरती सहर्ष मुस्काई है।
गर्व से तिरंगा फहराता, बह रहा पवन सुखदाई है।

–अध्यापिका, प्राथमिक पाठशाला, खालेगाँव, मसकनवा, गोण्डा, उ.प्र.

विश्व हिन्दी दिवस

❑रामा आर्य 'रमा'

हिन्दी दिवस मना रहे, पखवारा-सप्ताह।
अँधियारा दीपक तले, हिन्दी भरती आह।।
अँगरेजी घर-घर रमा, बैठी पांव पसार।
हीरे मोती हिन्द के, बिकते बीच बजार।।
भारत की है भारती, जन गण मन की शान।
हो विधान संसद 'रमा', मिले सदा सम्मान।।
चाहे जाति अनेक हों, चाहे धर्म अनेक।
किन्तु भारती के लिए, 'रमा' सभी जन एक।।
हिन्दी भाषा राष्ट्र की, हिन्दी सबकी शान।
हिन्दी का यश गान हो, हो हिन्दी का मान।।
हिन्दी ही अरमान है, हिन्दी है वरदान।
आओ हम मिलकर करें, हिन्दी का उत्थान।।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

मिट जायेगी

❑डॉ. कैलाश निगम

एक बार चेतना छली जो
भ्रान्तियों के हाथ
धीरे-धीरे ज्ञान की
पिपासा मिट जायेगी।
अपनों से घात करने का
पथ खोला यदि
अनुराग वाली परिभाषा
मिट जायेगी।
जोइते विदेशी ढंग से
जो अपने को रहे
पुरुषोत्तमों की अभिलाषा
मिट जायेगी।
अँगरेजी-अँगरेजी
आप रटते रहे जो
राष्ट्र से हमारी
राष्ट्र-भाषा मिट जायेगी।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

गुरु गोविन्द सिंह

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

सिंह सम 'गुरु गोविन्द' थे बली महान,
नाम सुन जिनका 'मुगल' भय खाते थे।
चलती कृपाण चपला सी गति धार जब,
तब रुण्ड, मुण्ड-अरि, पड़े दिखलाते थे।
सैन्य संगठन हेतु 'पंथ खालसा' था सजा
'सत श्री अकाल'-घोष, गर्जना सुनाते थे।
त्याग, तप, धर्म, कर्म-व्रती व अभय बनो,
हनो आततायी सदा, युद्ध मध्य गाते थे।
चुने गये जीवित दो, पुत्र थे दिवार मध्य।
तथा दो सुतों ने प्राण, रण में गंवाये थे।
ऐसे रण बांकुरे थे, 'सिंह गुरु गोविन्द' जी
युद्ध-वाद्य दिल्ली तक जिन्होंने बजाये थे।
पिता 'गुरु तेग बहादुर' ने कटा के शीश,
भारत में धर्म-संस्कार भी बचाये थे।
जन्म दिन पर उन्हें 'दयानन्द' याद करे,
'बोले सो निहाल' वाक्य जिन्होंने सिखाये थे।

–370/27, हाता नूरबेग, सआदत गंज, लखनऊ

मदिरापान

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

जोश मदिरा का, उड़ा देता होश मानव का,
मदिरा इंसान को, हैवान बना देती है।
कहर मचाती घर-बाहर भी आए दिन,
अपनों को भी लहू-लुहान बना देती है।
हवश शिकार बन जातीं बेटी-बहनें भी,
हरती ईमान, बे-ईमान बना देती है।
चाहो खुशहाली यदि, त्यागो विषप्याली यह,
दिवारम्भ को ही, अवसान बना देती है।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर–1, लखनऊ–20

कालजयी काव्य

सुभाष–जयंती पर

बड़ी दूर मुझको जाना है!

❑प्रकाशचन्द्र 'कविरत्न'

चढ़ा हुआ था रंग हृदय पर देशभक्ति का जिसके गहरा
विशाल बाहु चौड़ा सीना उन्नत मस्तक हँसमुख चेहरा।
जेलों में ही बीते जिसके होली - दीपावली - दशहरा
लगा रहा सरकार ब्रिटिश का जिस पर संगीनी पहरा।

निकल गया जो धूल झोंककर साफ ब्रिटिशदल की आँखों में
वह सुभाष चन्द्र बोस अकेला काम कर गया लाखों में।

प्रिय माता का दुलार छोड़ा घर छोड़ा सुख साधन छोड़ा
भारत सा प्रिय स्वदेश छोड़ा पर स्वदेश का प्यार न छोड़ा।
कहा किसी ने-'सुभाष बाबू, यह क्या तुमने मन में ठानी
कंटक पथ पर चलते चलते आह बिता दी भरी जवानी।

अब भी क्या बिगड़ा है हो गुजरा जो कुछ था होना
कर तरुणी से शादी भर लो सुख से दिल का कोना कोना।
मन की हालत साफ बताती खिंची भाल पर विशाल रेखा
हमने दुनिया का सुख देखा बतलाओं तुमने क्या देखा?'

उत्तर में यूँ कहा बोस ने- 'तुमने सुख की घड़ियां देखीं
हमने कृषक मंजूरों के आँखों में आँसू की लड़ियां देखीं।
देशभक्त सज्जन लोगों के हाथों में हथकड़ियां देखीं
कितनी लतिकाओं के बिखरे फूलों की पंखुड़ियां देखीं।

वीर लाजपत जैसों के लाठी से शीश फूटते देखे
मोती और जवाहर से जेलों में मूंज कूटते देखे।
भीगे बेतों की मारों से कितने आह सिसकते देखे
खुदी, भगत सिंह से फांसी पर कितने वीर लटकते देखे।

आह भूख से मर कर लाशों को सागर में फिंकते देखा
लड़के और लड़कियों को दस दस आने में बिकते देखा।
असुर विदेशी अन्यायी मायावी रावण छल बल करके
भारत की लक्ष्मी सीता को लेकर भगा पार सागर के।

जमा रहें हैं आह निरन्तर आधिपत्य आतंक असुरगण
किया राष्ट्र लक्ष्मण है मूर्छित चला मोहिनी शक्ति विलक्षण।
उस लक्ष्मण को चेतन करने मैंने यह बदला बाना है
बन हनुमान संजीवन लेने बड़ी दूर मुझको जाना है।'

कोटि नमन

❑विनोद चन्द्र पाण्डेय 'विनोद'

स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी! तुमको कोटि नमन है।
मुक्त कराने में भारत को निज भूमिका निभाई।
निर्भय होकर आजादी की, लड़ते रहे लड़ाई।।
किया समर्पित मातृभूमि-हित अपना तन-मन-धन है।
स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी! तुमको कोटि नमन है।।

देश-प्रेम का भाव अप्रतिम, था अन्तर में जागा।
घर-परिवार सभी कुछ तुमने लक्ष्य-हेतु था त्यागा।।
ध्येय-पूर्ति के लिए लगाया अपना यह जीवन है।
स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी! तुमको कोटि नमन है।।

फांसी के फन्दे पर झूले, कुछ परवार नहीं की।
भौतक सुख-सुविधा की तुमने कोई चाह नहीं की।।
अपनी कितनी ही इच्छाओं का तुमने किया दमन है।
स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी! तुमको कोटि नमन है।।

हँस आलिंगन किया मृत्यु का, लेकिन हार न मानी।
मरकर भी तुम अमर हो गये, अब भी अमर कहानी।।
स्वाधीनता-हेतु दिखलाई अपनी अडिग लगन है।
स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी! तुमको कोटि नमन है।।

धन्य-धन्य तुम, धन्य-धन्य है कार्य महान तुम्हारा।
सदा प्रवाहित होगी जग में यश की अविरल धारा।।
कौन नहीं जो अब भी करता निज अर्चन-वन्दन है।
स्वतंत्रता के प्रिय सेनानी! तुमको कोटि नमन है।।

–सी–10, सेक्टर जे, अलीगंज, लखनऊ

लखनऊ-समाचार

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के तत्वाधान में अमर शहीद स्वामी

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दिनांक २३ दिसम्बर २०१८ दिन रविवार को अपरान्ह २ बजे से ५ बजे तक आर्य समाज राजाजीपुरम् में मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों द्वारा स्वामी जी को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए गए। यज्ञ आर्य समाज राजाजीपुरम् द्वारा सम्पन्न कराया गया। नगर आर्य समाज की बहन उर्मिला जी, राधा जी, सदर आर्य समाज की बहन आशा लता जी एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभा की उपप्रधान स्नेह लता एवं उपमंत्री आशा अग्रवाल जी तथा राधेमोहन जी के भजनों द्वारा स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। आचार्य धारणा एवं डॉ.निष्ठा विद्यालंकार तथा नवनीत निगम प्रधान ने अपने प्रवचनों द्वारा स्वामी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर विद्वत्जन की गरिमामयी उपस्थिति रही। समस्त आर्य समाजों के सदस्य एवं पदाधिकारियों द्वारा उपस्थित होकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। राजाजीपुरम आर्य समाज द्वारा कार्यक्रम की सुन्दर व्यवस्था की गई। कार्यक्रम का संचालन प्रबोध सागर जौहरी मंत्री द्वारा किया गया। *(प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री)*

आर्य समाज आदर्श नगर का वार्षिकोत्सव

लखनऊ आर्य समाजों में प्रमुख स्थान रखने वाली आर्य समाज आदर्श नगर का वार्षिक उत्सव दिनांक ७ से १० फरवरी २०१९ तक आर्य समाज मंदिर में मनाया जायगा। उत्सव में आचार्य पुनीत (मुम्बई) वेदोपदेशक तथा श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) भजनोपदेशक को आमंत्रित किया गया है। प्रातः एवं सायंकालीन उभयसत्रों में यज्ञ, भजन, प्रवचन के कार्यक्रम चलते रहेंगे। अंतिम दिन रविवार को उत्सव का समापन दिन में विद्वानों के सम्मान तथा ऋषिभोज के साथ किया जायगा। उत्सव में आर्य समाज के पूर्व मंत्री श्री सतीश निझावन, जो सम्प्रति गुरुग्राम में हैं, के भी पधारने की पूर्ण आशा है।

आर्य समाज के प्रधान श्री सतीश चन्द्र बिसारिया ने धर्मप्रेमी जनता से इस चार दिनों तक प्रवहमान वेदज्ञान-गंगा में अवगाहन हेतु समस्त आर्य जनता को आमंत्रित किया है। विशेष जानकारी प्राप्ति हेतु श्री रुद्र स्वरूप, मंत्री, आर्य समाज आदर्श नगर (मो.९४५०३०१८४९) से सम्पर्क करें।

सत्यदेव सैनी को श्रद्धांजलि

दिनांक ५ जनवरी २०१९ को वैदिक विधि से लखनऊ भैंसाकुण्ड शवदाह स्थल

पर इंजीनियर सत्यदेव सैनी का दाह संस्कार सम्पन्न हुआ। दिनांक ७ जनवरी सोमवार को उनके निवास पर आर्य जगत् के विद्वानों, मित्रों तथा पारिवारिक स्वजनों की उपस्थिति में शान्तियज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं.दीनानाथ शास्त्री, विमल द्विवेदी, लखनऊ गुरुकुल के आचार्य रामकृष्ण, डॉ.वीरेन्द्र मुनि, प्रेममुनि, इं.अमृत मुनि, डा.रूपचन्द्र दीपक, इं. कान्ति कुमार और घनिष्ठ मित्रों में इं.रामकृष्ण हरिद्वार व शर्मा जी ने अपने उद्बोधन से श्रद्धांजलि सुमन अर्पित किये। अंत में उनके वैज्ञानिक पुत्र पंकज सैनी ने सभी का आभार धन्यवाद ज्ञापित किया। इं.सत्यदेव सैनी अपने पीछे पत्नी देवकी, दो पुत्र नीरज, पंकज तथा दो पुत्रियां ललिता और अंजना को छोड़ गए हैं। स्व.सैनी अपने सभी कार्यों को अत्यंत कुशलता पूर्वक सम्पन्न करके भरेपूरे समृद्ध परिवार से विदा हुए हैं। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। *(प्रेम कुमार)*

साहित्यिक विभूतियाँ सम्मानित

दिनांक १० जनवरी २०१९ गुरुवार को भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद् द्वारा

विश्व हिन्दी दिवस श्री महेशचन्द्र द्विवेदी (पूर्व डी.जी.पी.) की अध्यक्षता एवं डॉ.मोहनलाल अग्रवाल के निर्देशन एवं संरक्षण में मनाया गया। कार्यक्रम का संचालन सचिव श्री राजेश प्रकाश शर्मा ने किया। इस अवसर पर हिन्दी की विशिष्ट सेवा के लिए श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' एवं शिक्षाजगत के सशक्त हस्ताक्षर श्री राजकुमार गुप्त (से.नि.प्रधानाचार्य) को सम्मानित किया गया। कई वक्ताओं ने श्री विनम्र की साहित्य एवं पत्रकारिता क्षेत्र में अर्जित विशिष्ट उपलब्धियों पर प्रकाश डाला साथ ही श्री राजकुमार गुप्त के शिक्षक, प्रधानाचार्य एवं प्रबंधक के रूप में की गई सेवाओं की सराहना की गई।

सम्मान समारोह के तत्काल बाद में हिन्दी कविता संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ, जिसमें श्री विनम्र, राजकुमार गुप्त, महेशचन्द्र द्विवेदी, डॉ.मोहनलाल अग्रवाल के अतिरिक्त श्री अक्षय भाई, श्रीमती कान्तिकुमार, कवयित्री नीरजा द्विवेदी, महादेव प्रसाद प्रबंधक टी.डी.इंटर कालेज, साधुशरण वर्मा 'सरन', मृत्युंजय प्रसाद सम्पादक विश्व विधायक, राजेश प्रकाश शर्मा 'आग्नेय', वीरेन्द्र कुमार सक्सेना एवं डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने काव्यपाठ से सभी को मंत्रमुग्ध किया। इस कवि गोष्ठी में प्रख्यात साहित्य सेवी श्री देवकीनन्दन 'शांत' ने अपनी सरस संचालन शैली द्वारा सोने में सुगंध का संचार किया। शीत ऋतु को देखते हुए चायपान इत्यादि की व्यवस्था प्रशंसनीय एवं सराहनीय रही।

लखनऊ-समाचार

श्रीमती कमलेश जी की 76वीं वर्षगाांठ

२८.१२.१८। श्रीमती कमलेश पाल

(धर्मपत्नी श्री पाल प्रवीण) की ७६वीं वर्षगांठ योगाश्रम, अलीगंज में श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। शान्त, शालीन वातावरण में वैदिक यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री पाल प्रवीण की व्याख्यात्मक टिप्पणियां बीच-बीच में स्वर्ण में सुगंध का कार्य करती रहीं। यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के मंत्रों की विशिष्ट आहुतियाँ दी गईं। यज्ञोपरान्त कविश्रेष्ठ श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' ने कविता के माध्यम से कमलेश जी के सद्गुणों पर रोशनी डाली। श्री प्रेममुनि जी वानप्रस्थी ने एक अतिसुंदर भजन सुनाया। अन्त में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कमलेश जी के जीवन को ज्ञान, भक्ति और कर्म का संगम बताया। आपने कहा 'पद्म पत्र मिवाक्सा' की भांति- 'जल में कमलों की तरह कमलेश जी कर्म का पाठ सुनाती रहें।'

इस अवसर पर क्षेत्र के प्रबुद्ध नर नारी अच्छी संख्या में मौजूद थे। पारिवारिक जनों में अभिषेक और गीतांजलि, श्रीमती प्रमोद कुमारी, श्रीमती शशि, सुरेश चन्द्र तिवारी, देवेन्द्र स्वरूप जी, वीरेन्द्र स्वामी सरस्वती इत्यादि कई व्यक्तियों ने अपनी मंगलकामनायें प्रस्तुत कीं।

डॉ.उमाशंकर शुक्ल पुरस्कृत

३०.१२.१८। उ.प्र.हिन्दी संस्थान द्वारा

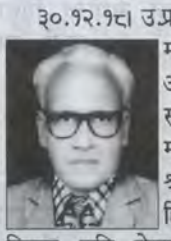

मालवीय सभागार में आयोजित पुरस्कार सम्मान समारोह में माननीय राज्यपाल श्री राम नाइक द्वारा हिन्दी साहित्य के विद्वान्, कवि, लेखक, प्राध्यापक डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' को उनके भागवत कथामृत (अवधी प्रबंध काव्य) पर पचहत्तर हजार रूपये की धनराशि सहित सम्मनित किया गया।

हिन्दी संस्थान को एक सुयोग्य पात्र को पुरस्कृत करने तथा डॉ.शितिकण्ठ को उनके मौलिक तथा श्रमसाधना पूर्ण काव्य रचना के लिए 'आर्य लोक वार्ता' की कोटिशः बधाई।

'अबोध' को विद्यासागर सम्मान

लखनऊ नगर के वरिष्ठ कवि

दयानन्द जड़िया 'अबोध' को एक विशाल सम्मान समारोह में गत १३.१२.१८ को विक्रम शिला हिन्दी विद्यापीठ, गांधीनगर, ईशीपुर भागलपुर (बिहार) ने 'विद्यासागर' जैसे उच्च सम्मान से सम्मानित किया। 'अबोध' जी को अब तक नगर व देश के विभिन्न राज्यों से ४० से ऊपर सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। स्मरण रहे कि अभी विगत सितम्बर माह में आपको नर्मदापुरम् होशंगाबाद में 'छन्दश्री' अलंकरण से अलंकृत किया गया था। 'अबोध' जी वृद्धावस्था में यद्यपि अस्वस्थ रहते हैं तथापि उनकी लेखनी निरन्तर गतिमान रहती है। 'आर्य लोक वार्ता' की बधाई।

टाण्डा-समाचार

मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज, टाण्डा

स्थापना दिवस एवं अन्य समारोह

७५ वर्ष पूर्व एक स्वप्नद्रष्टा ऋषिभक्त, आर्य स्वतंत्रता सेनानी बाबू मिश्रीलाल

बाबू मिश्रीलाल आर्य

आर्य ने टाण्डा क्षेत्र की निर्धनता और बदहाली को बहुत करीब से देखा और यह अनुभव किया कि क्षेत्र की दुरवस्था का मूल कारण अशिक्षा है और खासकर नारी-शिक्षा का तो दूर दूर तक कहीं अता पता नहीं है। समाजोत्थान की पुनीत भावना से अनुप्राणित होकर उन्होंने नारी शिक्षा का एक छोटा सा पौधा इस भूमि में आरोपित किया जो आज मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कॉलेज के रूप में एक सुन्दर और सघन वटवृक्ष का स्वरूप धारण कर चुका है। यह वटवृक्ष गोस्वामी तुलसी दास की इस उक्ति को चरितार्थ करता है-

नील सघन पल्लव फल लाला । अविरल छाँह सुखद सब काला।।

कन्या पाठशाला का यह पौधा स्वनामधन्य प्रधान जी के नाम से विख्यात श्री मिश्रीलाल आर्य द्वारा आरोपित किया गया था, जिसे उनके निधनोपरान्त सन् २००२ में उनके ज्येष्ठ कर्मयोगी पुत्र श्री आनन्द कुमार आर्य ने अपनी जन्मजात प्रतिभा और श्रम की वारिबूँदों से सींचकर पुष्पित पल्लवित किया। अपनी शैक्षिक यात्रा के ७५ वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में विद्यालय प्रबंध समिति ने स्थापना दिवस वसंत पंचमी, १० फरवरी, २०१९ से कार्तिक पूर्णिमा १७ नवम्बर २०१९ तक समारोहों, संगोष्ठियों और विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला द्वारा मनाने का फैसला किया है। प्रथम आयोजन १० फरवरी २०१९ को प्रातःकाल वैदिक यज्ञ के बृहद् आयोजन द्वारा होगा, जिसमें समस्त शिक्षाप्रेमी आमजनता को भाग लेने हेतु प्रबंध समिति ने आमंत्रित किया है।

लखनऊ-समाचार

आनन्द चौधरी एडवोकेट राष्ट्र निर्माण पार्टी के जिलाध्यक्ष मनोनीत

राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह ने श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट (मंत्री, आर्य समाज डालीगंज) को लखनऊ का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है। पार्टी के प्रतिनिधि श्री रज्जू भैया(दार्ये) ने श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट को जिलाध्यक्ष का पदभार ग्रहण कराया।

वैदिक उपदेश विद्यालय लखनऊ के छः मास पूर्ण

दि.१४.१२.१८ को वैदिक उपदेशक विद्यालय, लखनऊ के छः मास पूर्ण होने के उपलक्ष्य में बृहद यज्ञ किया गया। विद्यार्थियों ने अपनी-अपनी क्षमतानुसार वैयाकरण, दर्शनवित्, यज्ञाचार्य, वेदज्ञ एवं मोक्षाधिकारी बनने के संकल्प व्यक्त किये। प्राचार्य डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक' ने सबको नियमित अध्ययन एवं संध्या करने की प्रेरणा दी। विद्यालय में १५ वर्ष से कम आयु के ३ बालक और ३५ वर्ष के अधिक के १० विद्यार्थी हैं। सम्पर्क सूत्र-७३७३६८७६३१, प्राचार्य-६८३६१८१६६० *(प्रबोध आर्य, सचिव)*

शांति यज्ञ

२१.१२.१८। श्रीमती शान्ति भार्गव (पत्नी नारायण प्रसाद भार्गव), सी-११८१,

इन्दिरा नगर की पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ का आयोजन वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। स्मृति शेष शान्ति भार्गव (८७) अपने पीछे श्री विक्रम भार्गव, सुभाष भार्गव एवं प्रभात भार्गव- तीन पुत्रों तथा श्रीमती निशा श्रीमती मंजू एवं श्रीमती वीना भार्गव- पुत्रवधुओं एवं विनी, शेखर, संजय, साक्षी, श्रेय पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। इस अवसर पर समस्त पारिवारिक जनों ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ में आहुतियाँ देकर दिवंगता के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। *(संयोजक-सुभाष भार्गव)*

भू.पू.प्राचार्या दिवंगत

०८.०१.१९, बी-१४, भूतनाथ, इन्दिरा नगर। चिल्ड्रेन कान्वेण्ट विद्यालय की

भू.पू.प्रधानाचार्या श्रीमती निर्मला राय (७९) का स्वर्गारोहण दि. ०७.०१.१९ को आकस्मिक रूप में हो गया। आपकी पुण्य स्मृति में शान्ति यज्ञ वैदिक विधि विधान से डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। भूतनाथ मंदिर के आध्यात्मिक परिवेश में इस वैदिक यज्ञ में शताधिक व्यक्तियों ने भाग लिया और स्व.निर्मला राय के प्रति यज्ञ में आहुतियाँ देकर श्रद्धांजलि अर्पित की। पुत्र श्री संजय राय तथा पुत्रवधू श्रीमती पूनम राय ने यजमान का आसन ग्रहण किया तो पौत्र सौम्य राय एवं कु.अनन्या श्रद्धा संवलित होकर अन्य आसनों पर बैठे। दो मिनट मौन रहकर दिवंगत आत्मा की सद्गति और शान्ति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई। शिक्षा के प्रति समर्पित स्व.निर्मला जी अपने पीछे पुत्र पुत्रवधू के अलावा पुत्री संध्या तथा उदीयमान पौत्र सौम्य को छोड़ गई हैं।

अत्यावश्यक सूचना

'आर्य लोक वार्ता' कार्यालय में विनिमय के तौर पर- टंकारा समाचार, स्वस्ति पंथा, शान्तिधर्मी, आर्य मित्र, आर्य संदेश, वैदिक संसार, आर्य जीवन, दयानन्द संदेश, दिव्ययुग, अग्निदूत आदि पत्रिकाएं नियमित आती रही हैं किन्तु तीन महीनों से हमारे कार्यालय का पता बदल जाने के कारण ये पत्रिकाएं हमें नहीं प्राप्त हो रही हैं, फलस्वरूप हम अपना बहुप्रशंसित 'वाचनालय से' नामक स्थायी स्तम्भ जिसमें उपर्युक्त पत्रिकाओं की समीक्षाएं प्रकाशित होती हैं, प्रकाशित करने में असमर्थ हो रहे हैं। अस्तु, उपर्युक्त पत्रिकाओं के मान्य सम्पादकों व्यवस्थापकों से हमारा नम्र निवेदन है कि वे कृपया पृष्ठ ८ पर प्रकाशित कार्यालय के नये पते पर अपनी पत्रिकाएं भेजने का कष्ट करें। -प्रधान सम्पादक

सन् 2019 के आर्य पर्वो की तालिका - आर्य लोक वार्ता का स्नेहोपहार

लोक प्रचलित नववर्ष-२०१९-स्वागतम्

होता (ऋत्विक्) सदस्यों को विशेष धन्यवाद-बधाई-आभार

नया वर्ष दे आपको, वुख समृद्धि वरदान।
योग-यज्ञ से प्राप्त हो- स्वास्थ्य सिद्धि सम्मान।।

आर्य लोक वार्ता को 1500 रु. या इससे अधिक सहयौग प्रदान करने वाले होता (ऋत्विक्) सदस्यों की तालिका- वर्ष 2018

01.01.18 से 31.12.18 तक सहयोग प्राप्ति–तिथि क्रमानुसार

1. कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर** (01.01.18)
2. श्री अरविन्द कुमार यादव, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ** (01.01.18)
3. श्री आर.के.शर्मा, 4/155 एच, जानकीपुरम, **लखनऊ** (01.01.18)
4. रुक्मिणी आर्य, प्रधान, माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, **हरिद्वार** (08.03.18)
5. श्री सर्वमित्र शास्त्री, कमता, चिनहट, **लखनऊ** (10.03.18)
6. श्री अमन मिश्र, सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट, जानकी पुरम, **लखनऊ** (22.03.18)
7. श्री पाल प्रवीण, वैदिक सत्संग, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ** (27.03.18)
8. आचार्य आनन्द मनीषी, सी–1271, राजाजीपुरम, **लखनऊ** (27.03.18)
9. ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, **नई दिल्ली** (27.03.18)
10. इं श्री जे.पी.अग्रवाल, गायत्री लोक, कनखल, **हरिद्वार** (27.03.18)
11. श्री अरुण–श्रीमती अमिता विरमानी, आर्य समाज, चन्द्र नगर, **लखनऊ** (27.03.18)
12. श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, आर्य समाज, डालीगंज, **लखनऊ** (27.03.18)
13. श्री अजय कुमार जैन, कपड़ा कोठी, नीलगिरि चौराहा, **लखनऊ** (27.03.18)
14. श्री अरुण ओबेराय, 5/540, विराम खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (22.04.18)
15. श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, **लखनऊ** (30.04.18)
16. श्री अनिल कुमार, 2/76, विकास खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (05.06.18)
17. श्रीमती कनक वर्मा, त्रिवेणी नगर, सीतापुर रोड, **लखनऊ** (18.07.18)
18. श्रीमती कुमुद गुप्ता, बी–1/114, सेक्टर–जी, अलीगंज,, **लखनऊ** (18.08.18)
19. श्री पीयूषकान्त, 2/76, विकास खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (10.09.18)
20. श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, एडवोकेट, निशात गंज,, **लखनऊ** (15.10.18)
21. श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', 117, आदिल नगर, विकास नगर, **लखनऊ** (15.10.18)
22. पं.दीनानाथ शास्त्री, गोमती नगर विस्तार,, **लखनऊ** (09.11.18)
23. श्रीमती मालती त्यागी, विशाल खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ** (10.11.18)
24. श्रीमती प्रमोद कुमारी, एम.एस.37, सेक्टर–डी, अलीगंज, **लखनऊ** (22.11.18)
25. डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, **टाण्डा** (10.12.18)
26. श्रीमती अनिता सिंह, प्रधानाचार्या, डी.ए.वी.एकेडमी, **टाण्डा** (10.12.18)
27. श्रीमती कमलेश पाल, कमलेश कुटीर, अलीगंज, **लखनऊ** (28.12.18)
28. श्रीमती मिनी स्वरूप, डी–7/7, बसंत विहार, **नई दिल्ली** (28.12.18)
29. श्रीमती मधुर भण्डारी, बसंत कुंज, **नई दिल्ली** (28.12.18)
30. श्री शिशिर कुमार श्रीवास्तव, **पुणे** महाराष्ट्र, (31.12.18)

संस्थापक
माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
ज्वालापुर, हरिद्वार
एवं
'आर्य्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक, लखनऊ

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज

बाल्यकाल मुगलसराय, फिर यौवन में,
आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ आ गये।
हिन्दी सत्याग्रह के नेता बने, कारागार-
झेला, फिर आर्यभिक्षु बनकर छा गये।।
वेद के प्रचार हेतु ग्राम ग्राम धूमे, वाणी-
ओज मधुरस द्वारा जन मन भा गये।
आत्मबोध स्वामी संन्यासी आर्य वानप्रस्थ-
ज्वालापुर आश्रम का गौरव बढ़ा गये।।
-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

•••

राष्ट्रीय चिन्तन-चरित्र-पवित्र कीर्तिः
सद्धर्म-कर्म-परिपालन-पुण्य मूर्तिः।
स्वाध्याय-संयम-समाहित-तत्वबोधः
प्राप्तो महर्षि-पदवीं मुनिरात्मबोधः।।
संसार राग-रहितस्य जितेन्द्रियस्य
नित्यात्मबोध-परिलब्ध सुखानुभूतेः।
आदर्श जीवन मथोच्च विचारकस्य
धन्यं प्रशस्यमुपकार-परायणस्य।।
-डॉ.सुधाकर द्विवेदी

•••

आर्य पर्वो की तालिका : विक्रमी सम्वत् 2075-76 तद्नुसार सन् 2019

क्रम सं.	पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१	लोहड़ी, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	पौष शुक्ल, ७, वि.२०७५	१३.०१.२०१९	रविवार
२	मकर-संक्रान्ति	पौष शुक्ल, ९, वि.२०७५	१५.०१.२०१९	मंगलवार
३	गणतंत्र दिवस	माघ कृष्ण, ६, वि.२०७५	२६.०१.२०१९	शनिवार
४	वसन्त पंचमी	माघ शुक्ल, ५, वि.२०७५	१०.०२.२०१९	रविवार
५	माघी पूर्णिमा,रविदास जयन्ती	माघ पूर्णिमा, वि.२०७५	१९.०२.२०१९	मंगलवार
६	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन, कृष्ण, १०, वि.२०७५	०१.०३.२०१९	शुक्रवार
७	*शिवरात्रि (ऋषि-बोधोत्सव)*	फाल्गुन, कृष्ण, १३, वि.२०७५	०४.०३.२०१९	सोमवार
८	नवसंस्येष्टि/ होलिका दहन	फाल्गुन, पूर्णिमा, वि.२०७५	२०.०३.२०१९	बुधवार
९	आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा/नवसंवत्सर/ उगाड़ी/गुणी पड़वा/चैती चाँद	चैत्र, कृष्ण, १, वि.२०७६	२१.०३.२०१९	गुरुवार
१०	नवरात्र आरंभ	चैत्र, शुक्ल, १, वि.२०७६	०६.०४.२०१९	शनिवार
११	राम नवमी	चैत्र, शुक्ल, ९, वि.२०७६	१४.०४.२०१९	रविवार
१२	पं.गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख, कृष्ण, ४, वि.२०७६	२३.०४.२०१९	मंगलवार
१३	हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, ३, वि.२०७६	०३.०८.२०१९	शनिवार
१४	स्वतंत्रता दिवस	श्रावण, पूर्णिमा, वि.२०७६	१५.०८.२०१९	गुरुवार
१५	श्रावणी उपाकर्म-रक्षाबन्धन	श्रावण, पूर्णिमा, वि.२०७६	१५.०८.२०१९	गुरुवार
१६	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद, कृष्ण, ८, वि.२०७६	२४.०८.२०१९	शनिवार
१७	गांधी जयन्ती/शास्त्री जयन्ती	आश्विन, शुक्ल, ४, वि.२०७६	०२.१०.२०१९	बुधवार
१८	विजयादशमी/दशहरा	आश्विन, शुक्ल, १०, वि.२०७६	०८.१०.२०१९	मंगलवार
१९	दीपावली (ऋषि निर्वाणोत्सव)	कार्तिक, अमावस्या, वि.२०७६	२७.१०.२०१९	रविवार
२०	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष, कृष्ण, १२, वि.२०७६	२३.१२.२०१९	सोमवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।

सौजन्य : कृष्णा जी, प्रिंटेक, पार्करोड, लखनऊ

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा बाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, प्रिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में